SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 35 | अंक : 73वाँ | संयुक्तांक (अप्रैल, 2025-सितम्बर, 2025)

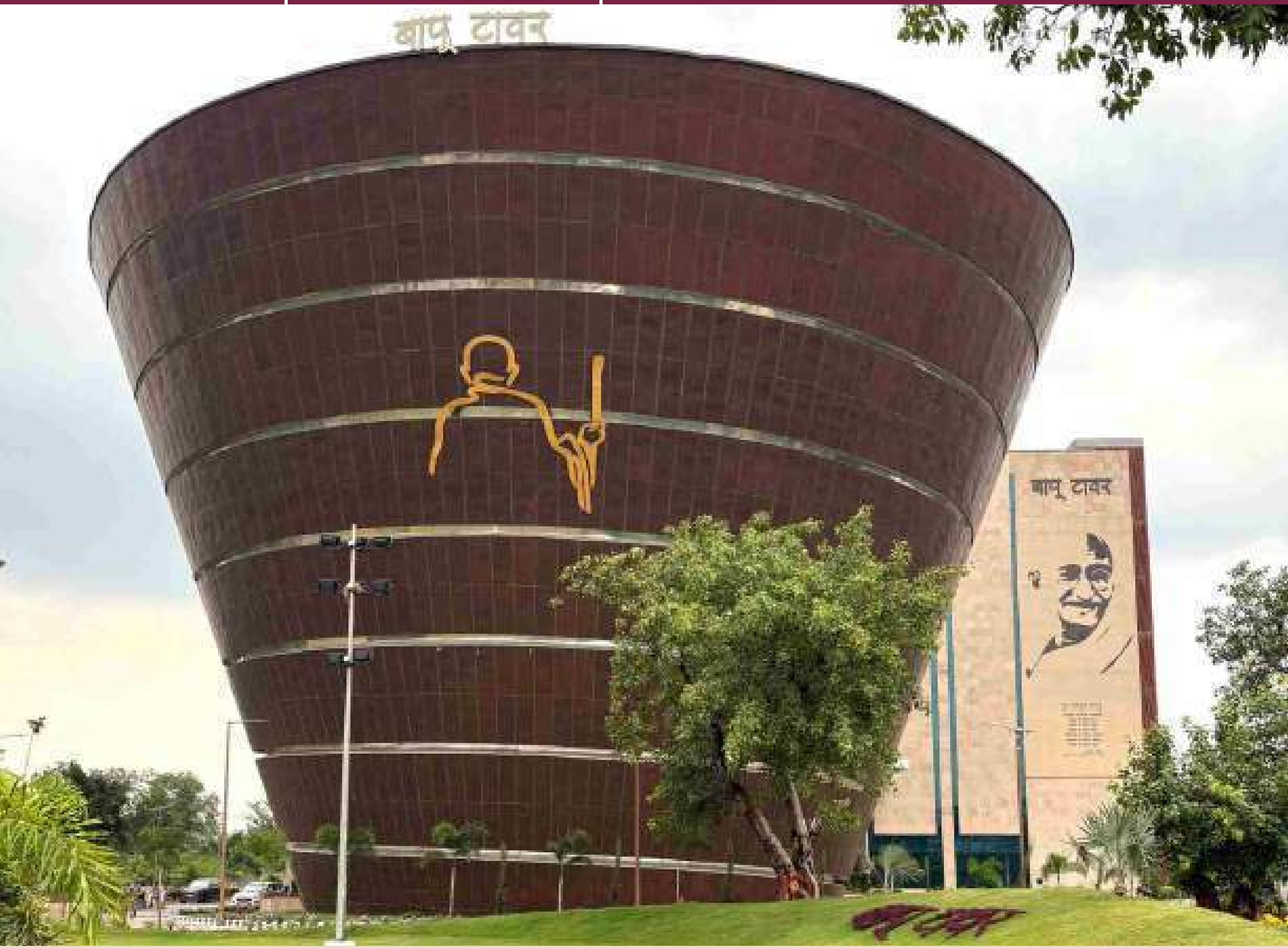

बापू टावर, पटना

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

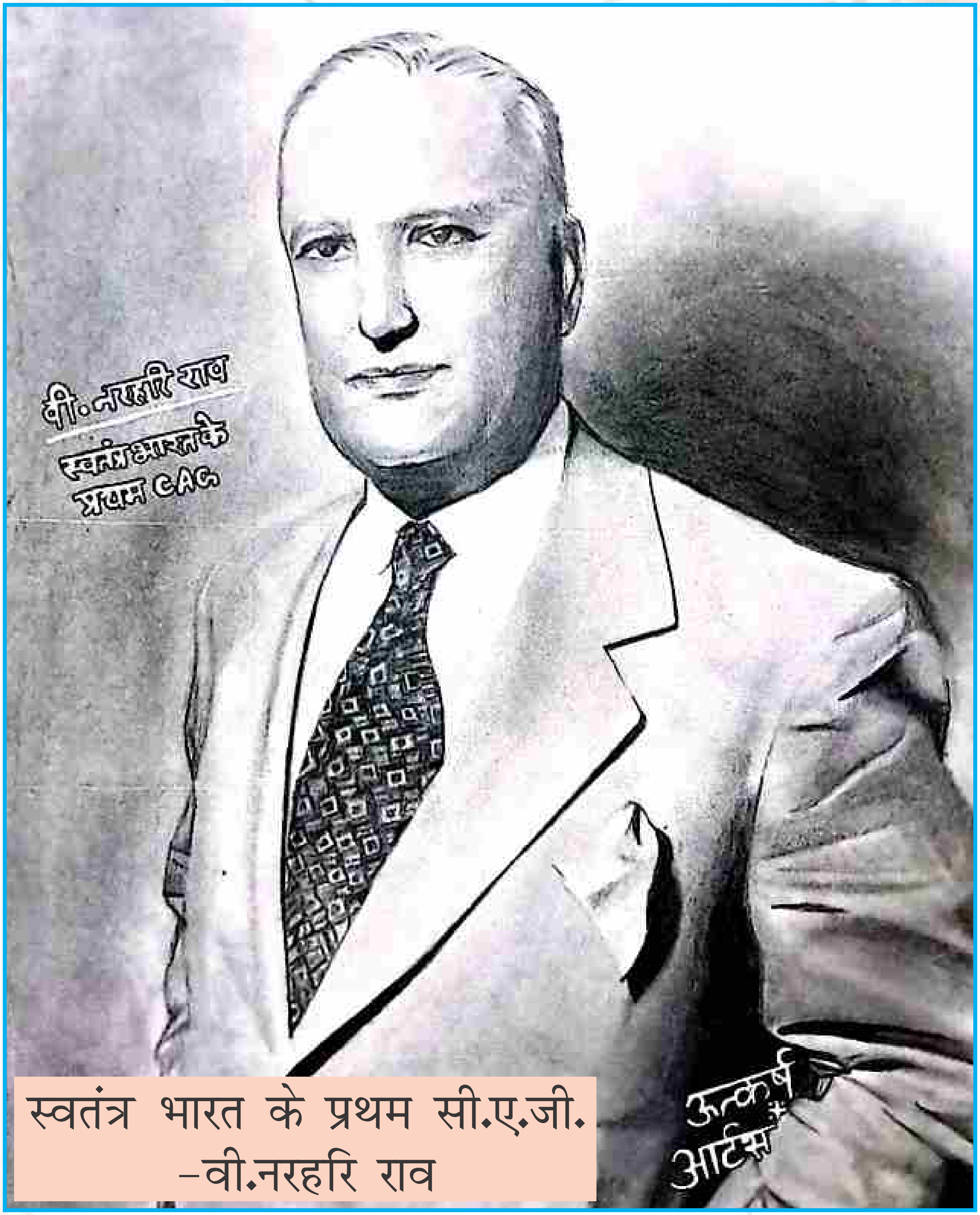

स्वतंत्र भारत के प्रथम सी.ए.जी.
–वी.नरहरि राव

–उत्कर्ष आनंद
द्वारा **रूपेश कुमार सिंह**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रहरी परिवार

डॉ. संदीप रॉय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री हाउतिनल्ल स्वानतक
विशेष कार्य अधिकारी

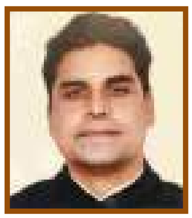

श्री अजय कुमार झा
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री सुजय कुमार सिन्हा
उपमहालेखाकार

श्री पियूष कुमार राय
उपमहालेखाकार

श्री राकेश रौशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शंकरा नंद झा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री संजीव कुमार नं.–4
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रवि प्रभात
कनिष्ठ अनुवादक

श्री दिलीप कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 35	अंक : 73वाँ	संयुक्तांक (अप्रैल, 2025-सितम्बर, 2025)

स्वत्वाधिकार	:	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना
प्रकाशन		प्रहरी
प्रकाशक	:	राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
आवरण पृष्ठ	:	बापू टावर, पटना
साज-सज्जा	:	निशा ग्राफिक्स, नाला रोड, पटना-800 004 मो०- 9708124620
मूल्य	:	राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने है। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादक मंडल

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 35 | अंक : 73वाँ | संयुक्तांक (अप्रैल, 2025-सितम्बर, 2025)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

डॉ. संदीप रॉय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री हाउतिनल्ल स्वानतक	विशेष कार्य अधिकारी
श्री अजय कुमार झा	वरिष्ठ उपमहालेखाकार
श्री सुजय कुमार सिन्हा	उपमहालेखाकार
श्री पियूष कुमार राय	उपमहालेखाकार
श्री राकेश रौशन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिवाकर राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री शंकरा नन्द झा	सम्पादक
श्री रूपेश कुमार सिंह	उप सम्पादक सह चित्र संयोजक
श्री राजू कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री रवि प्रभात	कनिष्ठ अनुवादक
श्री दिलीप कुमार	कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री अर्कजा आकृति	कनिष्ठ अनुवादक

इस अंक में

क्रम0 सं0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार		7
2.	संदेश	विशेष कार्य अधिकारी (प्रशासन) बिहार, पटना		8
3.	संदेश	वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना		9
4.	संदेश	उपमहालेखाकार (ए.एम.जी.–III) बिहार, पटना		10
5.	संदेश	उपमहालेखाकार (ए.एम.जी.–I) बिहार, पटना		11
6.	सम्पादक की कलम से....			12
7.	आपका पत्र मिला			13–14
8.	राजभाषा हिन्दी ही बन सकती है जनता और प्रशासन की शक्ति	लेख	मनोज कुमार नं.–1	15
9.	नंबर वन है... श्याम	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	17
10.	स्त्री विकास और स्त्रीत्व – संतुलन की तलाश	लेख	रूपेश कुमार सिंह	18–21
11.	घर वापसी	लेख	ललन कुमार सिंह	22
12.	सोनपुर पशु मेलाः परंपरा, संस्कृति और व्यापार का अनुपम संगम	लेख	शंकरा नन्द झा	23–24
13.	लड्डू	लेख	भुवन भाष्कर	25–26
14.	बिहुला–बिषहरी पूजा– साहस और समर्पण का प्रतीक	लेख	अर्कजा आकृति	27
15.	''जब मशीनें सोचने लगीं''आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः खतरा या अवसर?	लेख	लेखराज मीणा	28
16.	मानव मूल्य, समाज और संन्यास का दर्शन	लेख	दिलीप कुमार	29
17.	श्री रामेश्वरम और श्री तिरुपति बाला जी	लेख	योगेश कुमार मिश्र	30–32
18.	बरसात (बूँदा–बाँदी)	लेख	उत्तम नारायण	33
19.	पंचायती राज व्यवस्था का सफर	लेख	रवि प्रभात	34–34
20.	''मंत्रमुग्ध''– एमिली ब्रोंटे	अनुवाद	अर्कजा आकृति	36
21.	अनुशासन	लेख	शिव शंकर राय	37
22.	सोनपुर में लागल बा मेला	कविता	कुमार शैलेन्द्र चन्द	38
23.	अंडमान निकोबार द्वीप समूह का यात्रा वृतांत	यात्रा वृतांत	दीप शिखा गुप्ता	39
24.	श्रावण मास और कांवर यात्रा	लेख	स्वपनिल कुमार	40
25.	भिखारी बनते बच्चे	चिंतन	रजनीश वर्मा	41
26.	पार्क की हवा है सेहत की दवा	लेख	भूषण प्रसाद	42
27.	पापा मेरे पापा	कविता	रामौतार प्रसाद	43
28.	केरल यात्रा–देवों का अपना देश	यात्रा वृतांत	पंकज कुमार सिंह	44
29.	मानव जीवन से जंगलों, पहाड़ों और नदियों....	लेख	आदित्य शरण कौशलेश	45
30.	बादलों की सवारी–तवांग की ओर एक सफर	यात्रा वृतांत	गौरव कुमार महतो	46–47
31.	पुनर्मिलन	कहानी	अमित कुमार	48–49
32.	नाई की चतुराई	कहानी	प्रशांत प्रखर	50–51

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे प्रेम, सम्मान और समर्पण की प्रतीक, हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रहरी' का 73वां अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे साहित्यिक सरोकारों का प्रतीक है, बल्कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार के प्रति हमारे सामूहिक दायित्व और जुनून को भी बखूबी दर्शाती है।

हिंदी आज केवल हमारी राजभाषा ही नहीं है, बल्कि डिजिटल युग में यह जानकारी को जन–जन तक पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम बन चुकी है। सोशल मीडिया, ई–पत्रिकाओं और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे नए क्षेत्रों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि हमारी भाषा भविष्य की पीढ़ियों के लिए और भी प्रासंगिक व उपयोगी होती जा रही है। ऐसे समय में 'प्रहरी' का प्रत्येक अंक अपने नाम के अनुरूप न केवल हमारी भाषा–संस्कृति का संरक्षक है, बल्कि समय के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने का प्रेरणास्रोत भी है।

इस अंक में हमारे अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिजनों की रचनात्मक अभिव्यक्ति–लेख, कविताएँ, कहानियाँ, अनुवाद, यात्रा–वृतांत आदि–हिंदी के प्रति हमारे प्रेम और प्रतिबद्धता को नई ऊँचाइयाँ देती हैं। यह विविधता ही पत्रिका की सच्ची शक्ति है, जो पाठकों को निश्चित ही रुचिकर और प्रेरणादायक लगेगी। मैं सभी रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

संपादक मण्डल और सहयोगी साथियों ने जिस समर्पण और दक्षता से इस अंक को तैयार किया है, वह सराहनीय है। उनके अथक प्रयास इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के पीछे की वास्तविक शक्ति हैं। मैं पूरे दल को उनके योगदान के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रहरी' हम सबके बीच हिंदी भाषा के प्रति सम्मान और जुड़ाव की भावना को और प्रबल करेगी तथा इसे आने वाले अंकों में और समृद्ध बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

जय हिन्द !

(डॉ. संदीप रॉय)

विशेष कार्य अधिकारी (प्रशासन) बिहार, पटना

संदेश

हिंदी हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और भावनाओं की अभिव्यक्ति का सुंदर माध्यम है। शब्दों में बंधी यह भाषा हमारी सोच को आकार देती है, हमारे विचारों को उड़ान देती है और हमारी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती है।

कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रहरी" इसी उद्देश्य का अनुपम साधन है। यह केवल लेख और कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि हमारी रचनात्मक शक्ति, उत्साह और हिंदी के प्रति प्रेम का जीवंत दस्तावेज है। इसमें प्रस्तुत आलेख, अनुभव, विचार और काव्य हम सबको न केवल सोचने और समझने का अवसर देते हैं, बल्कि हमें प्रेरित भी करते हैं कि हम अपने कार्य और जीवन में निष्ठा, लगन और संवेदनशीलता का परिचय दें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "प्रहरी" हर अंक में नई ऊर्जा, नई चेतना और नई प्रेरणा का संचार करेगी। मैं इस पत्रिका के सम्पादन में लगे सभी साथियों और योगदानकर्ताओं को हृदय से शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह प्रयास हमारी हिंदी को और प्रगाढ़ तथा समृद्ध बनाएगा।

हाउतिनल्ल स्वानतक
विशेष कार्य अधिकारी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''प्रहरी'' एक बार फिर आपके समक्ष आ रही है, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर और भाषाई समृद्धि का प्रतीक है। यह पत्रिका न केवल हमारी रचनात्मकता का आईना है, बल्कि हिंदी भाषा के माध्यम से हमारी लेखापरीक्षा यात्रा को जीवंत बनाने का सशक्त माध्यम भी है। यह वह माध्यम है जो हमारे विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को सबसे सहज रूप में अभिव्यक्त करती है। कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के माध्यम से कर्मचारियों की साहित्यिक, रचनात्मक एवं बौद्धिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान किया जा रहा है, जो निश्चय ही सराहनीय प्रयास है।

"प्रहरी" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि यह हमारे कार्यालय की सृजनशील ऊर्जा, सर्मपण और हिंदी के प्रति अनुराग का जीवंत प्रतीक है। इसमें सम्मिलित लेख, कविताएँ, आलेख और विचार न केवल हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान देंगे, बल्कि हम सबको बेहतर संवाद और चिंतन की दिशा में प्रेरित भी करेंगे।

मैं सभी योगदानकर्ताओं–लेखकों, कवियों, चित्रकारों और संपादकों–का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपकी कलम से निकली ये रचनाएँ हमें नई ऊर्जा प्रदान करती हैं और कार्यालयीन वातावरण को और अधिक प्रेरणादायी बनाती हैं। हिंदी हमारी मातृभाषा है, जो हमारी विचारधारा को स्पष्टता और गहराई प्रदान करती है। आइए, हम सब मिलकर इसे और मजबूत बनाएँ, ताकि ''प्रहरी''हमारी एकता और उत्कृष्टता का प्रतीक बने।

मुझे विश्वास है कि ''प्रहरी'' का यह अंक अपने उद्देश्य में सफल होगा और आगामी अंकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

अजय झा

अजय कुमार झा
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार (ए.एम.जी.-III) बिहार, पटना

संदेश

मुझे यह देखकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका, 'प्रहरी', के 73 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यक्षेत्र की गतिविधियों को दर्शाती है, बल्कि हमारे सहयोगियों की रचनात्मकता और विचारों का मंच भी है।

यह पत्रिका हमारे कार्यालय की गतिविधियों और ऊर्जा का दर्पण है। इस अंक के माध्यम से, मैं आप सभी से हिंदी भाषा को कार्यालय में और अधिक बढ़ावा देने का आग्रह करता हूँ। हिंदी हमारी पहचान और सरकारी कामकाज का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। आइए, हम अपनी बैठकों, पत्राचार और दैनिक संवाद में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करें और इसे गौरवपूर्ण स्थान प्रदान करें। यह पहल निश्चित रूप से हमारे कार्यक्षेत्र में एक सकारात्मक बदलाव लाएगी।

मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को उनके अथक परिश्रम, समर्पण और उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आपके प्रयासों के बिना यह गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन संभव नहीं था। मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

सुजय कुमार सिन्हा
उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार (ए.एम.जी.-I) बिहार, पटना

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "प्रहरी' के 73 वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका न केवल कार्यालय में अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मकता को उजागर करती है बल्कि यह हमारे संवैधानिक दायित्व को पूरा करने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है।

भारत जैसे भाषिक विविधता वाले देश में हिंदी एक सेतु का कार्य करती है जो हम सभी को एकता के सूत्र में बाँधती है। हिंदी हमारे लिए केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब भी है। राजभाषा नीति का अनुपालन एवं सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए यह कार्यालय निरंतर प्रयासरत है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ हमारे सहकर्मियों की रचनात्मक पत्रिका एवं उनकी सृजनशीलता का दर्पण है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से हिंदी के संवर्धन और विकास में सहायता मिलेगी। मैं सभी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका के प्रकाशन से इस कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार होगा।

पीयूष कुमार राय
उपमहालेखाकार (ए.एम.जी–1)

सम्पादक की कलम से............

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रहरी" का यह नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। "प्रहरी", केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारी कार्यसंस्कृति, सृजनात्मकता और हिंदी भाषा के प्रति गहरी निष्ठा का दर्पण है। यह हमें हमारे दायित्वों की याद दिलाता है – जैसे प्रहरी सदैव सतर्क रहता है, वैसे ही हमें भी भाषा, साहित्य और संस्कृति की रक्षा एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए।

हिंदी, राजभाषा होने के साथ–साथ, राष्ट्र की आत्मा भी है। कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से जहाँ कार्य में सहजता आती है, वहीं यह हमारी कार्यशैली को जनता के निकट ले जाती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल हिंदी की विविध विधाओं (कविता, कहानी, लेख, संस्मरण आदि) को मंच प्रदान करते हैं, बल्कि कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को भी प्रोत्साहन देते हैं।

इस अंक में आपको साहित्यिक रचनाओं के साथ–साथ समसामयिक विषयों, सामाजिक सरोकारों और कार्यालय की गतिविधियों से जुड़ी रोचक झलकियाँ भी मिलेंगी। प्रत्येक योगदानकर्ता का प्रयास सराहनीय है, क्योंकि यह सामूहिक सहयोग ही 'प्रहरी' को जीवंत और विशिष्ट बनाता है।

मैं सभी सहयोगियों, लेखकों एवं संपादकीय मंडल के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी मेहनत और समर्पण से यह पत्रिका संभव हो सकी है। हमें विश्वास है कि यह अंक पाठकों को न केवल आनंदित करेगा, बल्कि विचारों की नई दिशा भी प्रदान करेगा।

हमारा उद्देश्य यह है कि 'प्रहरी' केवल सूचनाओं का माध्यम न रहे, बल्कि एक ऐसा मंच बने जहाँ विचारों का आदान–प्रदान हो, प्रेरणा मिले और हम एक–दूसरे से गहराई से जुड़ सकें।

आइए, हम सभी संकल्प लें कि हिंदी को अपने कार्य और जीवन का अभिन्न अंग बनाते हुए उसकी प्रतिष्ठा और समृद्धि को निरंतर बढ़ाएँगे।

आपके मूल्यवान सुझावों एवं सहभागिता की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका

(शंकरा नंद झा)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपका पत्र मिला

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
OFFICE OF ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फोन (Phone): 0172- 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

[illegible] दिनांक: /07/2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
[illegible] पटना - 800001

विषय: हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 72वें अंक की पावती [illegible]

महोदय/महोदया,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सादर

Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 16-07-2025
15:38:02
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, [illegible] 0172-2783149
Email [illegible]

[illegible] दिनांक:11-07-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार-800001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 72वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

[illegible]

[illegible]

भवदीय

[illegible]
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

[illegible] दिनांक: 18/07/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना
विषय:- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 72वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

[illegible]

[illegible]

([illegible] दिनांकित 17/07/2025 से जारी)

भवदीय,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 18-07-2025
12:33:57

सहायक निदेशक/राजभाषा

[illegible]

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) [illegible]

[illegible] दिनांक: 17-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
पटना - 800001

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 72वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 07.07.2025.

[illegible]

[illegible]

सादर,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 17-07-2025
[illegible]
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपका पत्र मिला

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

दिनांक 22.07.2025

प्रति,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय,बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001

विषय : हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 72वें अंक की पावती बाबत।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "प्रहरी" के 72वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। [illegible]

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। [illegible] पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दिनांक : 31.07.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना - 800 001

विषय- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 72वें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 72वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए सादर धन्यवाद। [illegible]

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/राजभाषा

दिनांक: 15-07-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक(राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, बिहार
पटना-800001

विषय - राजभाषा गृह पत्रिका "प्रहरी" के 72वें अंक की ई-प्रति के संबंध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा गृह पत्रिका "प्रहरी" के 72वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। [illegible]

[illegible]

सादर,

Digitally signed by
Leena Dariyal
Date: 15-07-2025
15:12:45

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /राजभाषा

Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

दिनांक 15.07.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय
बिहार, पटना

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "प्रहरी" के 72वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "प्रहरी" के 72वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। [illegible]

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 15-07-2025

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा हिन्दी ही बन सकती है जनता और प्रशासन की शक्ति

✍ मनोज कुमार नं.-1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा है। यह वह सेतु है जो विविध भाषाओं, संस्कृतियों और भौगोलिक क्षेत्रों को जोड़ता है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो लोगों के बीच संपर्क का माध्यम बने और शासन को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करे। यह भूमिका हिन्दी ने सफलता से निभाई है। वस्तुतः हिन्दी ही जनता और प्रशासन की शक्ति है। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक व्यवस्था की एक जीवंत व्याख्या है।

हिन्दी प्रशासन का आधार

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। इसका अर्थ है कि केन्द्र सरकार के सभी कार्य हिन्दी में किए जाने चाहिए। शासन में हिन्दी का प्रयोग न केवल प्रशासन को पारदर्शी बनाता है, बल्कि आम जनता तक जानकारी पहुँचाने में सहायक भी होता है।

प्रशासन में राजभाषा का इतिहास

प्राचीन भारत में प्रशासन में प्रयुक्त होने वाले शब्द सिर्फ राजकीय अभिलेख तक ही सीमित नहीं थे बल्कि उनका प्रयोग साहित्य और इतिहास में भी उपलब्ध था। इसलिए वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथों में भी राजा, उनके प्रकार, उनकी नियुक्ति, मंत्री तथा पदाधिकारी, उनकी आचार संहिता, प्रशासन, संचालन विधि, राजकाज आदि के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं। तब राजकाज एवं प्रशासन की भाषा संस्कृत थी। इस तथ्य के प्रमाण भारत में मुसलमानों के आगमन के पश्चात् देश के उन भागों में जहाँ उन्होंने शासन स्थापित किए, मिलते हैं। अरबी–फारसी को भारतीय भाषाओं के साथ प्रशासन में स्थान मिला। मुगल वंश के विभिन्न बादशाहों के शासन में हिंदी के प्रयोग के प्रमाण तथा साक्ष्य मिलते हैं। औरंगजेब के शासन में भी हिंदी का प्रयोग फारसी के साथ होता रहा। मुगलकाल के समय सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाले शब्दों, यथा– 'सरकार', 'तहसीलदार, 'वकील', 'चपरासी', 'सिपाही', 'अमीन', 'दफ्तर', 'खजांची', 'माल', 'मकान' आदि का प्रयोग आज भी धड़ल्ले से होता है। मराठों के शासनकाल में भी हिन्दी देखने को मिलती है, जहाँ युद्ध के पश्चात् तैयार किए गए संधि–पत्रों, राजनीतिक व्यापारिक समझौतों, अध्यादेशों, प्रमाण–पत्रों आदि की भाषा भी हिंदी थी। हिंदी का उत्तर–पूर्वी एवं मध्य भारत की समस्त भाषाओं से गहरा संबंध रहा है। उदाहरण के लिए, राजपूत के शासनों की भाषा डिंगल–पिंगल वस्तुतः राजस्थानी हिंदी ही थी, जिसमें शासकीय पत्र, टिप्पणियाँ, राजकर्मचारियों की आचार संहिता, राजा के आदेश आदि प्रस्तुत किए जाते थे। दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान, बुंदेलखण्ड के कीर्ति वर्मा, अजमेर के शासक हरिराज तथा मेवाड़ों के बीच हिन्दी ही प्रशासनिक भाषा के रूप में उपस्थित थी।

इसी परिप्रेक्ष्य में1785 ई०की एक सरकारी व्यवस्था मिलती है, जिसमें विभिन्न अधिकारियों को नियमों की अनुदित प्रतियाँ देने को कहा है। सरकार का यह उद्देश्य था कि उनकी आवाज आवाम् तक पहुँचाई जाए। कंपनी ने इस कार्य के लिए अनुवादकों की व्यवस्था की थी। हिंदी को लेकर अंग्रेजों के विरूद्ध स्वयं अंग्रेज भी लड़ते रहे। इनमें एक उल्लेखनीय नाम 'फ्रेडरिक पिन्काट' का है। ब्रिटिश सरकार से उनकी यह लड़ाई सन् 1868 ई० से प्रारंभ हो गई थी जबकि वे उस समय केवल बत्तीस वर्ष के थे। सन् 1888 में श्रीधर पाठक को लिखे पत्र में उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा था कि–''बीस साल पहले मैं एकमात्र यूरोपियन था, जिसने सरकार पर हिंदी के बारे में दबाव डाला और दस साल बाद इस नियम को बनवाने में सफल रहा कि भारत जाने वाले अंग्रेजों के लिए हिंदी की परीक्षा पास करना अनिवार्य किया जाए।''

स्वाधीनता के पश्चात विद्वानों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित हुआ कि भारतवर्ष के स्वाभिमान एवं गरिमा के अनुकूल हिंदी को प्रशासन की भाषा के रूप में

विकसित किया जाए क्योंकि भाषायी स्वाभिमान स्वतंत्र राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। हिंदी को राजभाषा या प्रशासन की भाषा के पद से सुशोभित करने के पीछे यह धारणा थी कि हिंदी केवल ज्ञान—विज्ञान, अध्ययन, साहित्य आदि की ही भाषा न रहे, लोक—संपर्क की ही भाषा न बने, बल्कि प्रशासनिक भाषा का जामा पहनकर सरकारी काम—काज, बोलचाल तथा कार्य—व्यवहार की भी भाषा बन जाए। इसके लिए वैधानिक व्यवस्था की गई, मानवीय एवं भौतिक संसाधन जुटाए गए तथा सरकारी कार्यालयों एवं क्षेत्रों में ऐसा परिवेश बनाने का प्रयास किया गया कि धीरे—धीरे हिंदी दैनिक कार्यों की भाषा बन जाए। इसी कारण 14सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला।

हिन्दी एक संपर्क भाषा

हिन्दी देश की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों की मातृभाषा भी। इसने एक संपर्क भाषा के रूप में भारत के विभिन्न हिस्सों को जोड़ा है। आसान शब्दावली और व्याकरण के कारण लोग इसे सहजता से सीख सकते हैं। मीडिया, फिल्म और संगीत के माध्यम से हिन्दी ने पूरे देश में लोकप्रियता पाई है। हिन्दी समाचार चैनलों, अखबारों और रेडियो की पहुँच देश के हर कोने तक है।

पर्यटन, रेलवे, बैंकिंग, और रक्षा जैसे क्षेत्रों में हिन्दी ने संपर्क को सरल बनाया है। चाहे वह दक्षिण भारत हो या पूर्वोत्तर, हिन्दी को एक आम संप्रेषण माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है।

आज हिन्दी केवल गाँवों और कस्बों की भाषा नहीं रही, बल्कि शहरों, शिक्षण संस्थानों और तकनीकी प्लेटफॉर्मों में भी इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

राजभाषा का प्रशासन में लाभ

देश की जनता को सरकारी योजनाओं, अधिकारों और सेवाओं की जानकारी अपनी भाषा में मिलती है। हिंदी में दस्तावेज, आवेदन पत्र, अधिसूचनाएँ और सरकारी संवाद उपलब्ध होने से जनता की भागीदारी बढ़ती है। ई—गवर्नेंस पोर्टल, डिजिटल सेवा केंद्र और अन्य सेवाओं में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। हिंदी में राजभाषा प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ और अनुवादन सेवाओं का नियमित आयोजन होने से कर्मचारियों के लिए हिंदी में कार्य करना सरल हुआ है।

तकनीक और राजभाषा का समन्वय

इक्कीसवीं सदी में जब सब कुछ डिजिटल हो रहा है, तब हिंदी ने भी तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाया है। हिंदी टाइपिंग टूल्स, वॉयस रिकग्निशन, अनुवादन सॉफ्टवेयर, डेटाबेस और मोबाइल ऐप्स ने प्रशासनिक कार्यों में हिंदी को और अधिक सक्षम बनाया है। डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहलों में हिंदी का विशेष योगदान रहा है। अब वेबसाइटें, ऐप्स, सरकारी पोर्टल और मोबाइल सेवाएँ हिंदी में भी उपलब्ध हैं, जिससे आम नागरिकों को निरंतर लाभ मिल रहा है।

राजभाषा विभाग की भूमिका

भारत सरकार के राजभाषा विभाग की स्थापना 26 जून 1975 को हुई, जिसने हिंदी के प्रचार—प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाई है। इसी वर्ष स्थापित भारतीय भाषा विभाग की भूमिका आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण रही। प्रत्येक वर्ष राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सरकारी संस्थानों को राजभाषा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिससे संस्थानों का उत्साह बढ़ता है। हिंदी पखवाड़ा, कार्यालयी हिंदी प्रशिक्षण तथा ऑनलाइन गतिविधियों जैसी योजनाएँ हिंदी को शासन की मुख्यधारा में बनाए रखने में सहायक हैं। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों का मूल्यांकन उनके हिंदी कार्यान्वयन के आधार पर किया जाता है, जिससे गुणवत्ता में सुधार होता है।

चुनौतियाँ

यद्यपि हिंदी का प्रचार—प्रसार व्यापक रूप से हो रहा है, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कुछ क्षेत्रों में अंग्रेजी का अत्यधिक प्रभाव देखा जाता है, तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों में हिंदी शब्दावली का अभाव अनुभव होता है, तथा गैर—हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी के प्रति झुकाव अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है।

समाधान

तकनीकी शब्दों का सरलीकरण करना

स्कूलों, कॉलेजों में हिन्दी का व्यावहारिक प्रयोग

हिन्दी में उच्च शिक्षा और शोध कार्य को बढ़ावा

विभिन्न भाषाओं के बीच समन्वय के माध्यम से हिन्दी को ''सेतु भाषा'' के रूप में प्रस्तुत करना

हिन्दी का उज्जवल भविष्य

कृत्रिमबुद्धिमत्ता (AI), मशीन ट्रांसलेशन, बॉट्स और **चैट**सिस्टम्स में हिन्दी की उपस्थिति बढ़ रही है। सोशल मीडिया पर हिन्दी सामग्री की मांग दिन—प्रतिदिन बढ़ रही है। अब समय आ गया है कि हम हिन्दी को केवल साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि विज्ञान, तकनीक, व्यापार और न्याय की भाषा भी बनाएं।

निष्कर्ष

हिन्दी जनता और प्रशासन के बीच एक शक्ति बने यह एक विचार नहीं, बल्कि एक सशक्त आंदोलन है। हिन्दी ने जहाँ जन—जन को जोड़ने का काम किया है, वहीं शासन को सरल और पारदर्शी बनाने में भी अपनी महत्ता सिद्ध की है। भारत जैसे विविधता भरे देश में हिन्दी एक ऐसी डोर है जो सभी को जोड़ती है। शासन का जितना अधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में होगा, सरकार के कामों का उतना ही लाभ आम जनता को शीघ्र मिलेगा। ◆

नंबर वन है... श्याम

✍ श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

किसी को कॉफी चाहिए
किसी को चाय
कोई फीकी लेगा
तो कोई मीठी,

सबकी जरूरत
करता है पूरी
एक अकेला श्याम।

एक हाथ में थामे
चाय की भारी केतली
दूसरे में कप से भरा ट्रे
इस टेबल से उस टेबल
चलायमान रहता है श्याम।

लबालब भरी दफ्तर की कैंटीन
हर कोई बातों में मशगूल
चारों ओर शोर ही शोर
जैसे अभी उतरी हो कोई बारात
हर टेबल से आती है
एक ही आवाज
श्याम
श्याम
इधर श्याम
इधर
इधर चार
इधर पांच

सबकी ओर नजरें करता है श्याम
कभी मुंडी हिलाकर
कभी आंखों की पुतली झपकाकर,
अभी आता हूं
हामी भरता है श्याम
रोज कई बारातियों को
चाय ऐसे पिलाता है श्याम
धीरज एक नहीं खोता है श्याम...!

शरीर से दुबला– पतला
चेहरा गंभीर
कभी आने नहीं देता
चेहरे पर कोई शिकन

न रहता नाराज किसी से
न शिकायत उसे दुनिया से
दिखती है हरदम
चेहरे पर उसके
हल्की सी मुस्कान।

ड्यूटी बजाने में
गर मैं लूं किसी का नाम
तो नंबर वन है श्याम।

स्त्री विकास और स्त्रीत्व - संतुलन की तलाश

✍ रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पाठकों को सादर नमस्कार ! आप इस आलेख को पढ़ना शुरू करें, उससे पहले अनुरोध है कि इसे स्त्री विकास और स्त्रीत्व के संबंध में एक पुरुष के विचार के तौर पर न लिया जाए क्योंकि तब इस आलेख को लेकर आपका दृष्टिकोण संकुचित हो जायेगा और इसकी आत्मा मर जाएगी। कृपया इस आलेख को एक पिता, पुत्र, पति या भाई की अभिव्यक्ति समझा जाए जो स्त्री के हर रूप में उसे देवी के रूप में देखता है, मानता है और उसकी पूजा करता है।

किसी विषय पर चिंतन करते समय सर्वप्रथम उसका अभिप्राय समझना जरूरी है। अतः स्त्री विकास और स्त्रीत्व पर चर्चा आरम्भ करने के पूर्व 'स्त्री', 'विकास' और 'स्त्रीत्व' इन तीनों शब्दों के अर्थों पर विचार आवश्यक है :–

1."स्त्री"–इस शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के ''स्त्यै'' धातु से हुई है, जिसका अर्थ यास्क, पाणिनी, पतंजलि तथा अन्य विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से दिया है परन्तु उन सभी की व्याख्याओं का मूल भाव ''इकट्ठा होना/करना'' अथवा ''लज्जा'' या ''गर्भ धारण करना'' है। यद्यपि यह अर्थ वर्तमान परिदृश्य में सीमित प्रतीत होता है, फिर भी यह स्त्री को सृजन की मर्यादित शक्ति का गरिमामय स्वरूप प्रदान करता है।

2. 'विकास'–यह किसी चीज के बेहतर, पूर्ण अवस्था की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है।

3. 'स्त्रीत्व'–यह स्त्री होने का प्रमाण यानि कोमलता, मर्यादा, धैर्य, त्याग, करुणा और सृजनात्मक शक्ति है।

इस प्रकार जब सृजन की मर्यादित व सम्मानित शक्ति –स्त्री अपनी क्षमता का विस्तार अपनी मूल पहचान और गरिमा के साथ प्राप्त करती है तो यह उसका, उसके स्त्रीत्व के साथ पूर्ण विकास होता है। स्त्रियों की कोमलता, धैर्य, त्याग, करुणा और सृजनात्मक शक्ति मानव संसार की प्राणवायु है, उसके अस्तित्व का आधार है। स्त्री के इसी स्त्रीत्व के कारण मनुस्मृति में ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' का उद्घोष मिलता है। इसका भाव यह था कि जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहीं वास्तव में समृद्धि और देवत्व का वास होता है।

लेकिन आधुनिक युग के साथ जब 'विकास' की नयी परिभाषाएँ गढ़ी जा रही हैं, सफलता और स्वतंत्रता की नयी कसौटियाँ बनाई जाने लगीं हैं, तब स्त्रियों का स्त्रीत्व जैसे कहीं भीड़ में खोता चला जा रहा है और यही सवाल आज हमें झकझोर रहा है कि "क्या स्त्री का विकास उसका स्त्रीत्व कुचल कर ही संभव है? क्या आधुनिकता की आंधी में उसकी मूल पहचान मिटती जा रही है?" आइये अपनी व्यस्त दिनचर्या से थोड़ा सा समय अपने जीवन–स्रोत, जीवन–शक्ति – "स्त्री" के लिए निकालें और उसकी वर्तमान दशा पर विचार करें।

स्त्री विकास सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य है।

विश्ववारा, लोपामुद्रा, उर्वशी, मैत्रेयी, गार्गी जैसी विदुषियों ने प्राचीन काल में भी अपनी विद्वता से भारत का मस्तक ऊँचा किया था परंतु उनके बाद के पुराने सामाजिक ढाँचे में स्त्री को उसका हक नहीं मिला। उसे घर की चहारदीवारियों में कैद रखा गया, उसकी शिक्षा को तुच्छ समझा गया, संपत्ति, निर्णय या स्वतंत्रता से वंचित किया गया। इसलिए उसका शिक्षित होना, आत्मनिर्भर बनना और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना जरूरी था। आज निस्संदेह स्त्रियाँ राजनीति, विज्ञान, साहित्य, रक्षा, खेल–हर क्षेत्र में अपनी योग्यता और क्षमता का परिचय दे रही हैं, नई ऊँचाइयाँ छू रही हैं। यह प्रगति निस्संदेह सराहनीय है। ये परिवर्तन न केवल जरूरी थे बल्कि पूरे समाज के विकास के लिए अनिवार्य भी क्योंकि स्त्रियाँ परिवार और समाज की रीढ़ हैं और यह रीढ़ जितनी मजबूत हो, परिवार उतना ही मजबूत होगा, समाज उतना ही सुदृढ़ होगा।

स्त्री विकास और स्त्रीत्व का द्वंद्व

पाठक गण! समस्या तथाकथित 'विकास' और 'आधुनिकता' की उस सोच में है जिसने स्त्री को केवल उपभोक्तावादी दृष्टि से देखना शुरू किया। प्रगति की इस

दौड़ में स्त्रीत्व के मूल गुणों को नजरअंदाज किया जा रहा है। आज की स्वतंत्र उपभोक्तावाद, मीडिया और विज्ञापन की परिभाषा के अनुरूप बनकर स्त्री की असली पहचान को ढाँक दे रही है।

खोता हुआ स्त्रीत्व

आधुनिक युग में नारीत्व गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, जहाँ महिलाओं की सहज संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों का दमन हो रहा है। करियर के दबाव में मातृत्व और पारिवारिक दायित्वों को बाधा माना जा रहा है, जबकि पश्चिमी जीवनशैली की अंधी नकल ने सांस्कृतिक जड़ों और पारिवारिक मूल्यों को कमजोर किया है। सर्वाधिक चिंताजनक बात यह है कि संवेदनशीलता और नैतिकता जैसे गुणों को अब प्रगति में बाधक माना जाने लगा है, जबकि ये मानव समाज की आधारशिला हैं। इस प्रकार नारीत्व का क्षरण न केवल महिलाओं बल्कि संपूर्ण सामाजिक ताने–बाने के लिए गहरा संकट है। स्त्रीत्व के क्षरण हेतु उत्तरदायी कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:–

स्त्री विकास का बाजारीकरण –महिलाओं ने पारंपरिक बंधनों से मुक्ति की लड़ाई तो लड़ी, परन्तु बाजार ने इस मुक्ति का व्यावसायिकरण कर दिया। वास्तविक मुक्ति (मानसिक, सामाजिक, आर्थिक) के स्थान पर उन्हें ''छद्म स्वतंत्रता'' (उपभोग की आजादी) दी जा रही है। आज महिलाएँ उपभोक्तावादी संस्कृति की शिकार हो रही हैं, जहाँ ''महिला सशक्तिकरण'' के नाम पर महँगे ब्रांडेड उत्पाद (फैशन, सौंदर्य प्रसाधन) बेचे जा रहे हैं। ''तुम जो चाहो बनो'' जैसे नारे महिलाओं की सोच को आधुनिक नहीं बना पा रहे, बल्कि उनमें दिखावटी आधुनिक दिखने की लालसा पैदा कर रहे हैं। अब उनकी पहचान उनके करियर या व्यक्तित्व से नहीं, बल्कि उनके उपभोग के तरीकों से तय होती है। जब ये इच्छाएँ पारिवारिक मूल्यों और आर्थिक सीमाओं से टकराती हैं, तो व्यर्थ की कुंठा पैदा करती हैं।

मीडिया के दुष्प्रभाव –मीडिया आज स्त्री के व्यक्तित्व और स्त्रीत्व को आकार देने वाली सबसे बड़ी ताकतों में से एक बन चुका है। लेकिन विडम्बना यह है कि जहाँ एक ओर यह महिलाओं को स्वतंत्रता, समानता और आत्म–अभिव्यक्ति के अवसर दिखाता है, वहीं दूसरी ओर यह स्त्रीत्व को सतही, और उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करके उसके मूल स्वरूप को कुचलता भी है।

1.विज्ञापन और फैशन उद्योग स्त्री को सौन्दर्य की संकीर्ण परिभाषाओं में बाँध दे रहे हैं। गोरे रंग, शारीरिक आकर्षण, छरहरी काया और आभूषणों के प्रदर्शन को 'आदर्श स्त्रीत्व' के रूप में पेश किया जा रहा है। इससे स्त्रियाँ अपने भीतर की संवेदनशीलता, मातृत्व, करुणा और आत्मीयता को गौण मानकर बाहरी आवरण पर अत्यधिक ध्यान देने लगती हैं। एक तरफ जहाँ विज्ञापन स्त्रियों को लक्ष्य बनाकर उन्हें भ्रमित कर रहे हैं वहीं दूसरे लक्ष्यों को साधने में उनका इस्तेमाल नितांत आकर्षण और उपभोग की वस्तु के रूप में किया जा रहा है। पुरुष–आधारित उत्पादों जैसे –परफ्यूम, अंतःवस्त्रों, डियोड्रेंट के विज्ञापनों में उनका कामुक चित्रण किया जा रहा है। इसी प्रकार का चित्रण शराब और सॉफ्ट ड्रिंक की बोतलों, गाडियों जैसे अन्य उत्पादों के मामलों में भी किया जा रहा है। ऐसे विज्ञापन स्त्रीत्व पर कुठाराघात हैं।

2. टीवी धारावाहिकों में महिलाओं को दो चरम रूपों में दिखाया जाता है – या तो अत्यधिक त्यागमयी और सहनशील पत्नी–माँ के रूप में, या फिर संवेदनहीन, आक्रामक और नैतिक मूल्यों से दूर एक आधुनिक महिला के रूप में। ये दोनों ही छवियाँ महिला के वास्तविक संतुलित व्यक्तित्व से दूर हैं। इन धारावाहिकों में महिलाओं को हमेशा पूर्ण श्रृंगार में दिखाया जाता है, अच्छे और बुरे महिला पात्रों की भरमार रहती है, जबकि पुरुष पात्र अक्सर निर्णय लेने की शक्ति से हीन होते हैं। इन कहानियों में तलाक, पुनर्विवाह और बेवफाई जैसे विषय हावी रहते हैं, जिनका गरीब/मध्यम वर्गीय परिवारों की वास्तविक समस्याओं से कोई संबंध नहीं होता। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि शिक्षित महिलाएँ भी इन अवास्तविक चित्रणों को सही मानकर इन्हें बहुत रूचि और समर्पण के साथ देखती हैं।

3. **सोशल मीडिया** आज वास्तव में पूरे समाज के लिए अनसोशल मीडिया बन चूका है। यह स्त्रियों को उनकी आँखों से दूर पराये लोगों और एक आभासी दुनिया से तो जोड़ रहा है, लेकिन अपनी तमाम महत्वाकांक्षाओं के कारण अतिव्यस्तता के बीच बचा–खुचा जो समय अपने परिवार को देकर वह उसके करीब जा सकती थी, वह फेसबुक और इन्स्टाग्राम पर लुटा रही है। रील्स पर दौड़ती उँगलियों ने उसकी नींद, उसका स्वास्थ्य और उसके रिश्ते उससे छीनने शुरू कर दिए हैं। इन्हीं रील्स पर अधिकाधिक लाइक्स और कमेंट्स के चक्कर में आज हमारी बहनें फूहड़ता का शिकार बन रही हैं। भद्दे कमेंट्स पाकर भी वे फिल्मी अश्लील गानों पर अपने होंठ चलाकर, अपने भौतिक सौन्दर्य का प्रदर्शन कर स्वयं को बॉलीवुड अभिनेत्री समझ इतरा रही हैं और हमारा बेगैरत पुरुष समाज इन्हें देखकर खुद के भीतर छिपे पशु को संतुष्ट कर रहा है। यहाँ तक कि अगर ऐसी रील्स से अगर कोई स्त्री प्रसिद्ध हो जाए तो उसके परिवार वाले भी बड़े गर्व के साथ उन रील्स को साझा कर रहे हैं। **जो पद्मावती, खिलजी से अपने सतीत्व की रक्षा हेतु आग में कूद पड़ी थी, आज अनगिनत खिलजियों के लाइक्स और कमेंट्स के लिए अनजाने में अपने–आप को भोग की वस्तु बनाकर उनके सामने परोस रही हैं और उनका स्त्रीत्व परित्यक्त होकर आँसू बहा रहा है।**

शिक्षा/कैरियर का दबाव –आज के समय में शिक्षा और करियर स्त्रियों की प्रगति का महत्वपूर्ण साधन बन चुके हैं। इससे वे आत्मनिर्भर हो रही हैं और समाज में अपनी पहचान

स्थापित कर रही हैं। परन्तु जब शिक्षा और करियर का दबाव अत्यधिक बढ़ जाता है तो स्त्रियाँ अक्सर यह मान बैठती हैं कि मातृत्व, परिवार और रिश्तों के प्रति संवेदनशील होना उनकी प्रगति में बाधा है। आर्थिक स्वतंत्रता और पेशेवर पहचान की होड़ में स्त्रियों से अपेक्षा की जाती है कि वे कठोर, प्रतिस्पर्धी और व्यवहारिक बनें, जबकि उनकी स्वाभाविक विशेषताएँ—सहानुभूति, करुणा, ममता, नैतिक दृष्टि—कमजोरी समझी जाने लगती हैं। इस तरह शिक्षा और करियर का दबाव स्त्रीत्व के कोमल मूल्यों को दबा देता है। इसके परिणामस्वरूप स्त्रियों के सामने खड़ा होता है—करियर और परिवार में संतुलन बनाए रखने का द्वंद्व। उन्हें कई बार परिवार और मातृत्व को स्थगित करना पड़ता है, जिससे मानसिक तनाव, अपराधबोध और आत्मविरोध की स्थिति बन जाती है। इसके अलावा, प्रतिस्पर्धी जीवनशैली में सांस्कृतिक और सामाजिक जड़ों से कटाव होने लगता है, और स्त्री धीरे–धीरे अपनी मौलिक पहचान खो बैठती है।

स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार —यद्यपि यह स्त्री विकास से स्त्रीत्व को प्रभावित करने वाले कारणों में से नहीं है लेकिन यह वह सबसे बड़ा कारण है जिसके कारण स्त्री को जैसे ही विकास का मौका मिलता है, स्वतंत्रता मिलती है, वह अपने स्त्रीत्व से मुक्त होना चाहती है। पुरुष समाज द्वारा किए गए अन्याय और अपराधों ने स्त्रीत्व की उस गरिमा को चोट पहुँचाई है जो प्राकृतिक रूप से सम्मान और गौरव का प्रतीक है। स्त्रियों में अपने स्त्रीत्व को कमजोरी मानने की मानसिकता का एक बड़ा कारण पुरुष–प्रधान समाज द्वारा लंबे समय से किया गया अन्याय और शोषण है।

(क)दुर्व्यवहार और भेदभाव —बचपन से ही लड़कियों को कई बार कमतर आँका जाता है, उनके अधिकार सीमित किए जाते हैं और उन्हें "कमजोर" या "दूसरे दर्जे" का दर्जा देकर पाला जाता है। इससे उनके भीतर यह भावना गहराती है कि उनका स्त्री होना ही उनकी बाधा है।

(ख)यौन उत्पीड़न और छेड़छाड़ —रोजमर्रा की जिंदगी में कार्यस्थल, विद्यालय, सार्वजनिक स्थान या यहाँ तक कि परिवार में भी स्त्रियाँ उत्पीड़न का सामना करती हैं। ऐसे अनुभव स्त्रीत्व को गरिमा के बजाय बोझ या खतरे के रूप में देखने को मजबूर कर देते हैं।

(ग)बलात्कार और हिंसा —जब किसी स्त्री के स्त्रीत्व को ही उसकी असुरक्षा बना दिया जाए, तब वह अपने ही अस्तित्व से डरने लगती है। बलात्कार जैसे अपराध न केवल शारीरिक हिंसा हैं बल्कि स्त्री के आत्मसम्मान और स्त्रीत्व पर गहरा आघात पहुँचाते हैं।

(घ)सामाजिक दृष्टिकोण —विडंबना यह है कि अपराध के बाद भी समाज पीड़िता को ही दोषी ठहराता है। यह दोहरा व्यवहार स्त्रियों को यह महसूस कराता है कि उनका स्त्रीत्व ही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है।

समाधान की राहें —"स्त्रीत्व" अर्थात् कोमलता, दया और सृजनशीलता स्त्री की मूल पहचान है जो उसकी सामाजिक स्थिति का आधार बनती है। स्त्री विकास और स्त्री–शक्ति का समन्वय आवश्यक है, क्योंकि यह न केवल उसके मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करता है, बल्कि पारिवारिक संबंधों को भी सुदृढ़ बनाता है। शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री अपनी विनम्रता, निष्ठा और आचरण से परिवार में स्थिरता लाती है। वह अपने कार्यक्षेत्र में संतोषपूर्वक कार्य करती है और समाज में सम्मान प्राप्त करती है। ऐसा संतुलन स्त्रियों के लिए प्रेरणादायक है, जो सफलता और संवेदनशीलता दोनों को साथ लेकर समाज में सकारात्मक दिशा प्रदान करती हैं। मेरे विचार में इस संतुलन की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं :–

(क)दुर्व्यवहार और भेदभाव का समापन— लड़कियों को बोझ मानने की मानसिकता का त्याग अपरिहार्य है। बेटियों की उपलब्धि की सराहना की जानी चाहिए तथा यह काम लड़कियों का, यह काम लड़कों का है, लिंग भेद वाली ऐसी धारणाएँ हटानी होंगी।

(ख)शिक्षा का सही स्वरूप —शिक्षा को सिर्फ नौकरी या परीक्षा पास करने का जरिया नहीं होना चाहिए बल्कि इसमें इंसान को अच्छे मूल्य, सहानुभूति, जीवन जीने की कला और लैंगिक समझ भी सिखाने हेतु पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए जाने चाहिए। विद्यालयों और महाविद्यालयों में लैंगिक–समानता और जिम्मेदार स्वतंत्रता पर नियमित रूप से कार्यशालाएँ आयोजित होनी चाहिए। इससे स्त्रियाँ सिर्फ कमाने का जरिया नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार इंसान के रूप में विकसित होंगी। उनमें करियर के साथ–साथ समाज के प्रति समझ और भावनात्मक जुड़ाव भी बना रहेगा।

(ग)स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व का संगम —स्वतंत्रता का अर्थ 'मैं जो चाहूँ करूँ' नहीं समझा जाना चाहिए बल्कि इसके साथ सामाजिक, पारिवारिक और नैतिक जिम्मेदारियों का ज्ञान एवं अनुसरण भी होना चाहिये ।

(घ)परिवार को बोझ नहीं, आधार मानना —परिवार को भार नहीं समझते हुए संरचनात्मक और भावनात्मक सहारा माना जाना चाहिए। पितृत्व अवकाश की अवधि, वर्तमान में स्त्रियों के मातृत्व अवकाश की अवधि की अपेक्षा बहुत कम है, इसे बढ़ाया जाना चाहिए ताकि शिशु पालन में पुरुष स्त्रियों को यथोचित सहयोग दे पायें और वे कार्यस्थल पर मातृत्व का कर्तव्य पूरा न कर पाने की ग्लानि से ग्रस्त न हों। घर के कामों का समान वितरण भी किया जाना चाहिये, ये नहीं की एक ही साथ ऑफिस से घर लौटे पति–पत्नी में पति टीवी के सामने बैठ जाए और स्त्री रसोईघर में जाने को मजबूर हो ।

(ङ)सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव —बच्चों में सामाजिक रीति–रिवाजों की आधुनिक प्रासंगिकता की उनकी आलोचनात्मक समझ विकसित करने के प्रयास किए जाने

चाहिए। अप्रासंगिक और हानिकारक प्रथाओं को सुधारा/हटाया जाना चाहिए ताकि विकास के पथ पर इनसे व्यर्थ के टकराव से स्त्रीत्व को हानि न पहुंचे ।

(च)मीडिया और बाजार की भूमिका में सुधार –मीडिया को स्त्रीत्व को केवल मनोरंजन या उपभोग तक सीमित न कर, स्त्री के वास्तविक व्यक्तित्व, संघर्ष और संवेदनशीलता को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। विज्ञापन व फैशन जगत को कृत्रिम सौंदर्य मानकों के बजाय आत्मविश्वास, प्रतिभा और संवेदना को आदर्श बनाना होगा। सिनेमा और धारावाहिकों में संतुलित और वास्तविक स्त्री–चित्रण आवश्यक है, जबकि सोशल मीडिया को दिखावे और फूहड़ता से हटकर ज्ञान, रचनात्मकता और सामाजिक संवाद को बढ़ावा देना चाहिए। तभी स्त्री विकास और स्त्रीत्व का संतुलन संभव होगा।

(छ)स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार पर रोक –स्त्रियों को उनके स्त्रीत्व के कारण वंचित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उनके अधिकारों की रक्षा के प्रभावी उपाय सुनिश्चित किए जाने चाहिए। महिलाओं को अपने अस्तित्व और मर्यादा का बोध होना आवश्यक है, जिसके लिए बचपन से ही समानता और सम्मान की शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे किसी भी प्रकार के भेदभाव को सहन न करें। यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और भेदभाव से सुरक्षा हेतु सख्त कानूनों का पालन और सुरक्षित कार्यस्थल अनिवार्य है। अपराधियों को कठोर दंड देने से महिलाओं में आत्मविश्वास और सुरक्षा की भावना बढ़ेगी। मीडिया, शिक्षा और पारिवारिक संस्कारों के माध्यम से यह संदेश फैलाना चाहिए कि स्त्रीत्व दुर्बलता नहीं, बल्कि शक्ति, सृजन और समानता का प्रतीक है।

स्त्रीत्व और पुरुषत्व का वैज्ञानिक/अध्यात्मिक पहलू –हम सभी स्त्री–हार्मोन और पुरुष–हार्मोन से अवगत हैं। ये हार्मोन सिर्फ रसायन नहीं परमात्मा की शक्ति हैं जिनसे वह अपनी सृष्टि के सफलतापूर्वक संचालन हेतु अनिवार्य, पुरुषत्व और स्त्रीत्व की अलग पहचान और गुणों को कायम रखता है। यद्यपि सृष्टि दोनों के प्रेम और मिलन से ही विकसित होती है परन्तु उनका पृथक सह–अस्तित्व परमात्मा ने आवश्यक रखा है । जब किसी स्त्री में पुरुष हार्मोन बढ़ जाते हैं तो वह बांझपन के अभिशाप का शिकार हो जाती है और जब पुरुष में स्त्री हार्मोन बढ़ जाएँ तो वह नपुंसकता की ओर बढ़ने लगता है, अपना सामर्थ्य खोने लगता है । इस व्यवस्था का क्या अर्थ है ? यही कि स्त्री को पुरुषों का आचरण और पुरुषों को स्त्री का आचरण प्रकृति द्वारा ही वर्जित है। गृहस्थी की गाड़ी पुरुषत्व और स्त्रीत्व के दोनों पहियों से ही चलती है। इनमें से कोई गर्व या लज्जा का विषय नहीं है। अतः स्त्री द्वारा पुरुषों से होड़ और उनकी बराबरी में स्त्रीत्व का तिरस्कार, प्रकृति का तिरस्कार है, उसके नियमों की अवहेलना है।

प्रिय पाठकगण ! इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्त्री विकास और स्त्रीत्व परस्पर विरोधी नहीं बल्कि एक दुसरे के पूरक हैं। स्त्री समाज की वह धुरी है जिस पर भविष्य टिका है। यदि उसका स्त्रीत्व सुरक्षित है, तो समाज स्वस्थ और मजबूत है। स्त्री और पुरुष के रिश्ते को प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं देखना चाहिए। वे सहयात्री हैं। जिस प्रकार दो पंख बिना सामंजस्य के उड़ान नहीं भर सकते, उसी तरह स्त्री और पुरुष सहयोग के बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता। इसीलिए जरूरी है कि पुरुष भी स्त्री की क्षमता और स्त्रीत्व का सम्मान करें।

आने वाले समय की स्त्री को यह याद रखना होगा कि स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं, बल्कि जिम्मेदारी संग जीने की क्षमता है, आधुनिकता का अर्थ परंपरा और मूल्यों को त्यागना नहीं, बल्कि उन्हें नए युग में सार्थक बनाना है और सफलता का अर्थ केवल पद या धन नहीं, बल्कि अपने स्त्रीत्व पर गर्व करते हुए संपूर्ण जीवन जीना है। तभी हम कह पाएँगे कि वास्तव में स्त्री, ईश्वर के वरदान और अपनी पहचान अपने स्त्रीत्व, अपने व्यक्तित्व को खोए बिना, अपनी असली ताकत के साथ आगे बढ़ रही है।

◆

घर वापसी

✍ **ललन कुमार सिंह**
सहायक पर्यवेक्षक

बीस बरस पहले एक लड़का अपना घर–दुआर, माई–बाऊ को छोड़कर, आँखों में बड़े–बड़े सुनहरे सपने संजोए, घर से 250 किमी दूर पढ़ाई करने पटना आया था। वह बड़े भाई के साथ रहकर पढ़ाई करता और सुबह–शाम खाना भी पकाता था। साथ ही बड़े भाई की सेवा भी पूरी निष्ठा से करता था। बड़े भाई के कपड़े धोने से लेकर उनके पैर दबाने तक, हर कार्य करता था। उसके मन में बड़े भाई के प्रति वही सम्मान था जो भरत के हृदय में श्रीराम के प्रति था। जो भी बड़े भाई के मित्र कमरे पर आते, तो छोटे भाई का समर्पण देखकर बोल पड़ते –"आपको तो भरत जैसा भाई मिला है।"

इसी तरह कई साल बीत गए। बड़े भाई की पढ़ाई में माँ–बाप ने अपनी पूरी जमीन गिरवी रख दी थी। अंततः बड़े भाई को इंजीनियर की नौकरी मिल गई और अच्छी–खासी तनख्वाह भी मिलने लगी। लेकिन नौकरी मिलते ही उसने घर–परिवार से नाता तोड़ लिया। पत्नी–बच्चों के साथ वह सुख–पूर्वक रहने लगा। माँ–बाप और छोटे भाई का हाल–चाल लेना भी उसने छोड़ दिया। गिरवी पड़ी जमीन छुड़वाना तो दूर, बुजुर्ग माँ–बाप का सहारा बनना भी उसने जरूरी नहीं समझा।

उधर, एक–एक कर उस लड़के (छोटे भाई) के सभी दोस्तों को नौकरियाँ मिलती गईं। लेकिन वह सुबह 5 बजे से रात 9 बजे तक घर–घर जाकर ट्यूशन पढ़ाया करता था। बीच में 2–3 घंटे रूम पर आता, तो वह समय खाना बनाने, बर्तन–कपड़े धोने में ही खप जाता। इसी बीच उसकी शादी भी कर दी गई। कुछ वर्षों बाद घर में लक्ष्मी का आगमन हुआ। आँगन किलकारियों से गूंज उठा, लेकिन भविष्य उसे अब भी अंधकारमय लगता था। पीछे मुड़कर देखता तो पाता कि जिन दोस्तों के साथ पढ़ा था, वे सब आज सरकारी नौकरियों में स्थापित हो चुके थे। बड़े भाई की याद आते ही उसका हृदय तड़प उठता। कुल मिलाकर, अब पटना में रहना उसे चुभने लगा था। ट्यूशन पढ़ाकर किसी तरह पत्नी–बच्चे का गुजारा हो रहा था।

फिर कोरोना महामारी और लॉकडाउन ने रही–सही कसर पूरी कर दी। ट्यूशन पूरी तरह बंद हो गए और आमदनी का कोई दूसरा साधन नहीं रहा। माँ ने स्वयं कष्ट सहकर एक–दो बार हजार–दो हजार रुपये भेजे, लेकिन किराया, राशन, दूध, सब्जी और दवाओं का प्रबंध फिर भी मुश्किल से हो पाता।

एक दिन शाम को अचानक काले बादल छा गए। तेज हवा और बूंदाबांदी होने लगी। हमने सभी खिड़की दरवाजे बंद कर लिए थे। तभी दरवाजा खटखटाने की आवाज आई। बिजली भी चली गई थी। मैंने मोबाइल की टॉर्च ऑन की और दरवाजे की ओर बढ़ा। खोलने से पहले आवाज लगाई –"रविन्द्र जी?"

जवाब आया –"जी भैया।"

रात के साढ़े नौ बज रहे थे। मुझे लगा, वे पानी लेने आए हैं। लेकिन जैसे ही दरवाजा खोला, रविन्द्र जी बोले –"भैया, अब जा रहा हूँ घर। यहाँ मन नहीं लगता। वहीं कुछ कर लेंगे।" और प्रणाम करने के लिए झुके ही थे कि मैंने उन्हें संभालते हुए कहा –"हिम्मत मत हारिए रविन्द्र जी।" मेरा भी गला भर्रा गया, पर उन्हें ढांढस बंधाता हुआ नीचे गाड़ी तक गया। वहाँ एक छोटा–सा पिकअप गाड़ी पर उनका सारा सामान लदा था और हाथ में एक कटोरा था, जिसमें रास्ते के लिए भीगे हुए चने रखे थे।

सच है –चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों, जब मंजिल सामने हो तो इंसान समंदर भी पार कर लेता है। लेकिन जब वर्षों बाद बिना मंजिल के हताश होकर घर लौटना पड़ता है, तो आसमान भी आँसू रोक नहीं पाता। शायद इसीलिए आज रविन्द्र जी की घर–वापसी पर आसमान ने भी आँसुओं की बारिश की। बीस साल पहले जब वह छोटा–सा बैग लेकर घर से निकले थे, तो आँखों में सपनों की चमक थी। लेकिन आज गाड़ी भर सामान के साथ लौटते समय आँखों में आँसू और मन में गहरी निराशा थी।

सुबह–सुबह जब गाड़ी घर पहुँची, तो माँ आँखों में आँसू लिए उसी जगह खड़ी थीं, जहाँ से 20 बरस पहले उन्होंने बेटे को आँचल से अलग किया था। गाड़ी से उतरते ही रविन्द्र जी माँ के पैरों पर गिर पड़े और बिलखते हुए बोले

–"हम आ गईनी माई, तू चिंता मत कर, हम आ गईनी।"

सही ही कहा गया है –माँ के आँचल में जो सुख है, वह दुनिया की किसी चीज में नहीं है। ◆

सोनपुर पशु मेलाः परंपरा, संस्कृति और व्यापार का अनुपम संगम

✍ शंकरा नन्द झा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय संस्कृति में मेलों का विशेष स्थान रहा है। ये न केवल व्यापारिक केंद्र होते हैं, बल्कि धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक उत्सव और सामाजिक मेलजोल के प्रतीक भी हैं। इन्हीं में से एक है– बिहार का प्रसिद्ध सोनपुर पशु मेला, जिसे एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है। हरिहर क्षेत्र मेला जिसे स्थानीय भाषा में छत्तर मेला के नाम से जाना जाता है, गंगा और गंडक नदियों के संगम पर आयोजित होता है। यह मेला न केवल पशु व्यापार का केंद्र है, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक उत्सव भी है, जहाँ ग्रामीण भारत की झलक मिलती है।

सोनपुर मेले का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है, जो वैदिक काल से जुड़ा हुआ माना जाता है। यहाँ लाखों श्रद्धालु और व्यापारी इकट्ठा होते हैं, जो पशुओं की खरीद–फरोख्त के साथ–साथ लोक नृत्य, नाटक, खेलकूद और हस्तशिल्प की खरीदारी का आनंद लेते हैं। 2025 में यह मेला 9 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलेगा, जो कार्तिक पूर्णिमा पर आरंभ होगा। इस मेले में हाथी, घोड़े, ऊँट, भैंस, बकरी, कुत्ते, पक्षी और अन्य पशुओं का व्यापार होता है, हालाँकि वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के बाद हाथियों का व्यापार प्रतिबंधित हो गया है और वे अब केवल प्रदर्शन के लिए लाए जाते हैं।

यह मेला केवल व्यापार तक सीमित नहीं है। यहाँ गंगा महाआरती का भव्य दृश्य, लोक कलाकारों के प्रदर्शन और पारंपरिक व्यंजनों की विविधता देखने को मिलती है। आधुनिक समय में ऑटो एक्सपो, रेल ग्राम प्रदर्शनी और डिजिटल सेवाएँ जैसे नवीन आकर्षण जुड़ गए हैं। बिहार पर्यटन विकास निगम द्वारा आयोजित यह मेला न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है, बल्कि वैश्विक पर्यटकों को भी आकर्षित करता है।

इतिहास

सोनपुर पशु मेले का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार, इसका आरंभ उत्तर वैदिक काल में हुआ, जब यह मवेशी व्यापार का प्रमुख केंद्र था। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने यहाँ से अपनी सेना के लिए हाथी और घोड़े खरीदे थे।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'वोल्गा से गंगा' में हरिहर क्षेत्र के पशु बाजार का वर्णन किया है, जो इस मेले की प्राचीनता को प्रमाणित करता है।

ऐतिहासिक मान्यताओं एवं उल्लेखों से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभ में यह मेला हाजीपुर में आयोजित होता था, जहाँ हरिहरनाथ मंदिर में पूजा की जाती थी। ऐसा माना जाता है कि भगवान राम ने जनकपुर जाते समय इस मंदिर का निर्माण कराया था।

मुगल काल में औरंगजेब के आदेश पर मेला सोनपुर स्थानांतरित किया गया, जिससे इसका विस्तार हुआ। मुगल सम्राट अकबर और 1857 के विद्रोह के नायक कुंवर सिंह भी यहाँ हाथी खरीदने आते थे।

ब्रिटिश काल में रॉबर्ट क्लाइव ने 18वीं शताब्दी में सोनपुर में घोड़ों के लिए एक बड़ा अस्तबल स्थापित किया। यह मेला तमिलनाडु से लेकर दिल्ली तक के व्यापारियों को आकर्षित करता था।

2020 में कोविड महामारी के कारण मेला पहली बार रद्द हुआ, जो सैकड़ों वर्षों की परंपरा का अपवाद था। 2024 में यह फिर से भव्य रूप से आयोजित हुआ, जिसमें बॉलीवुड गायकों के प्रदर्शन शामिल थे।

यह मेला न केवल व्यापारिक, बल्कि सामाजिक इतिहास का दर्पण भी है। यहाँ नौटंकी कलाकार गुलाब बाई जैसी हस्तियाँ प्रदर्शन करती थीं। आज यह आधुनिक तत्वों से युक्त हो गया है, परंतु अपनी जड़ों से अब भी जुड़ा हुआ है। सोनपुर को 'छोटी काशी' कहा जाता है, क्योंकि यहाँ विष्णु और शिव दोनों विराजमान हैं।

पौराणिक महत्व

सोनपुर मेले का सबसे महत्वपूर्ण पौराणिक आधार

गज–ग्राह की कथा है, जो भगवान विष्णु की लीलाओं से संबंधित है। पुराणों के अनुसार, गंडक नदी में एक गज (हाथी) और ग्राह (मगरमच्छ) के बीच भीषण युद्ध हुआ। यह युद्ध कई वर्षों तक चला, जिसमें मगरमच्छ ने हाथी को अपनी मजबूत पकड़ में जकड़ लिया। संकट में फँसे गज ने भगवान विष्णु की आराधना की। भगवान विष्णु ने हरिहर रूप (विष्णु और शिव का संयुक्त स्वरूप) धारण किया और गज को ग्राह के चंगुल से मुक्त किया। इस घटना की स्मृति में हरिहर नाथ मंदिर की स्थापना हुई, जो सोनपुर मेले का केंद्रीय धार्मिक स्थल है। यह कथा मेले की धार्मिकता और आध्यात्मिकता का आधार है, और इसे हर साल कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान और महाआरती के माध्यम से स्मरण किया जाता है।

कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान और महाआरती इस पौराणिक कथा को जीवंत करती है। मंदिर का वर्तमान स्वरूप मुगल काल में राजा राम नारायण द्वारा बनवाया गया। यह स्थान पितृ तर्पण के लिए भी प्रसिद्ध है। मेले की शुरुआत इस स्नान से होती है, जो आस्था का प्रतीक है।

मेले की गतिविधियाँ

सोनपुर मेला विविध गतिविधियों का केंद्र है। निम्नलिखित गतिविधियाँ प्रमुख हैं:–

पशु व्यापार

मुख्य आकर्षण पशु बाजार है। यहाँ ऊँट, घोड़े, गधे, भैंस, बकरी, कुत्ते, खरगोश, मुर्गी और पक्षी बिकते हैं। हाथी अब प्रदर्शन के लिए आते हैं। नेपाल, भूटान और दक्षिण पूर्व एशिया से व्यापारी आते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

लोक नृत्य, संगीत, नौटंकी और थिएटर के प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं। 2024 में ऐश्वर्या निगम और मैथिली ठाकुर जैसे कलाकारों ने यहाँ गायन प्रस्तुत किया था। कला ग्राम में मधुबनी चित्रकला, सुजनी कढ़ाई और सिक्की शिल्प प्रदर्शित किए जाते हैं। रात्रिकालीन थिएटर और कार्निवल राइड्स विशेष आकर्षण हैं।

अन्य आकर्षण

ऑटो एक्सपो, रेल ग्राम प्रदर्शनी (टॉय ट्रेन सहित), राजस्व विभाग का डिजिटल नक्शा स्टॉल, और खान–पान के विविध स्टॉल इस मेले की शोभा बढ़ाते हैं। यहाँ कश्मीरी शॉल, हस्तशिल्प, कृषि यंत्र, फर्नीचर और लोक खिलौने बिकते हैं। गंगा महाआरती का दृश्य अत्यंत मनोहारी और अविस्मरणीय होता है।

आर्थिक प्रभाव

सोनपुर मेला स्थानीय अर्थव्यवस्था का मजबूत स्तंभ है। लाखों पर्यटकों के आगमन से व्यापार बढ़ता है। हस्तशिल्प, पशु और व्यंजनों की बिक्री से लाखों रुपये का कारोबार होता है। किसानों को पशु बेचने का अवसर मिलता है, जबकि पर्यटन पैकेज नए रोजगार सृजित करते हैं। टूर पैकेज, स्विस कॉटेज प्रतिदिन (₹3,000/– से ₹5,000/–) और परिवहन सेवाओं से स्थानीय व्यवसाय फलते–फूलते हैं। हालाँकि पशु व्यापार में कमी आई है, लेकिन आधुनिक बाजार और पर्यटन ने इसे संतुलित कर दिया है।

सांस्कृतिक महत्व

यह मेला बिहार की ग्रामीण संस्कृति का सजीव प्रतिबिंब है। लोक कलाओं, नाटकों और संगीत के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहर संरक्षित रहती है। महिलाओं के खेल और कला प्रदर्शन लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं। अंतरराष्ट्रीय पर्यटक यहाँ भारतीय परंपराओं की झलक पाते हैं, जो सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करता है।

आधुनिक परिवर्तन और चुनौतियाँ

आधुनिकता ने मेले को नया रूप दिया है। ऑटो एक्सपो और डिजिटल सेवाओं ने इसे तकनीकी युग से जोड़ा है, परंतु भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता और पशु कल्याण जैसी चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। कृषि में पशुओं पर निर्भरता घटने से बैलों की खरीद–बिक्री कम हुई है, लेकिन दुधारू पशुओं – जैसे विभिन्न नस्लों की गाय और भैंसों – की माँग अब भी बनी हुई है।

पर्यटकों के लिए टिप्स

हाजीपुर रेलवे स्टेशन से इस मेला क्षेत्र की दूरी 3 किमी, सोनपुर रेलवे स्टेशन से महज 500 मीटर और पटना स्टेशन से लगभग 15 किमी है। यहाँ ट्रेन, बस तथा यातायात के अन्य साधनों से सुगमतापूर्वक पहुँचा जा सकता है। अग्रिम बुकिंग करें, आरामदायक जूते पहनें, और समूह में भ्रमण करें। मेला क्षेत्र में ही निर्मित स्विस कॉटेज मेला क्षेत्र में ठहरने का एक आरामदायक, रोमांचक एवं बेहतर विकल्प हो सकता है। भीड़भाड़ वाले दिनों में कीमती सामान साथ न रखें।

सोनपुर पशु मेला परंपरा और आधुनिकता का अनुपम संगम है। यह बिहार की आत्मा, लोक संस्कृति और आस्था का उत्सव है, जो हर वर्ष नदियों के संगम पर भारत की विरासत को पुनः जीवित करता है।

लड्डू

✍ **भुवन भास्कर**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लड्डुओं को कम मत आँकिए। लड्डू खुशियाँ, परमानंद और सफलता के प्रतीक हैं। लड्डू वही खाता–खिलाता है जिसे कुछ मनचाहा मिल गया हो। ये खाने वाले और खिलाने वाले दोनों को अंदर से मीठा करने में समर्थ होते हैं। यह आपको खुशमिजाज, आत्मीय और मिलनसार व्यक्ति में बदल सकते हैं और जैसा कि आप जानते ही हैं, ऐसा स्वभाव ही आपको ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है।

आदमी का मुँह मीठा केवल इसीलिए करवाया जाता है कि बंदा मीठा–मीठा बोले। लड्डुओं का काम ही यही है–उन्हें मुँह में रखते ही दिमाग पर आनंद के बादल छा जाते हैं। जीभ से लेकर गले और जिगर तक ऐसी अलौकिक कृपा बरसने लगती है कि शैतान भी साधु में बदल जाए। आदमी लड्डू खाता है और खिलाने वाले के बारे में अच्छा–अच्छा सोचने लगता है। यदि ऐसा न होता तो लड्डू खिलाने वाले क्यों अपनी अंटी ढीली करते और क्यों किसी को लड्डू खिलाने या किसी के यहाँ लड्डू भेजने की जहमत उठाते?

एक बार लड्डू बना लें, फिर हफ्तों खाते रहें। ज्यादा भाग–दौड़ और माथापच्ची की जरूरत नहीं। ये स्वाद से भरपूर, गरिष्ठ और विविधता से युक्त होते हैं। ये इतने प्रकार के आते हैं और इतनी तरह से बनाए जाते हैं कि आप गिनते–गिनते हैरान हो जाएँ। और फिर इनमें जमाने भर की बेहतरीन चीजें डाली जाती हैं। तरह–तरह के मावे और ड्राई फ्रूट्स इन्हें अलौकिक बना देते हैं। हिंदुस्तानियों ने लड्डू बनाने के क्षेत्र में इतने प्रयोग किए हैं और इतने तरह के लड्डुओं का आविष्कार कर लिया है कि यदि उनका ही कॉपीराइट मिल जाए तो देश मालामाल हो सकता है। यह हमारे देश का असली फास्ट फूड है।

वो तो अमेरिका अमीर है, पैसों के दम पर जो चाहे कर सकता है, इसीलिए फास्ट फूड के नाम पर उसकी जंक फूड की चेन पूरी दुनिया में फैली हुई है। यदि हमारी जेबें भी उसकी तरह भरी होतीं तो पूरी दुनिया के मुँह में केवल लड्डू ही भरे होते। सुना है, स्पेस में जाने वाले अपने साथ नीरस–सी चीजें कैप्सूल में भरकर ले जाते हैं। मन मारकर खाते होंगे वे सब। अब जब आदमी को कायदे से, मन भरकर खाने को न मिले तो सौंपे गए काम में उसका मन कैसे लगे? ऐसे में वे सरकारी बाबुओं जैसी फाइलें निपटाकर लौट आते होंगे। एक बार लड्डू का डब्बा उनके साथ रखकर देखिए–हो सकता है वे फिर टारगेट से ज्यादा अचीव कर लें और ब्रह्मांड के बाहर का भी चक्कर लगा आएँ। कोई नई पृथ्वी ही खोज निकालें और यदि ऐसा हो सके तो यहाँ की आधी आबादी को वहाँ शिफ्ट कर इस दुनिया को रहने लायक बनाया जा सकता है।

इतिहास गवाह है कि दुनिया में जितनी बड़ी–बड़ी लड़ाइयाँ हुईं–थोक में दो–दो विश्वयुद्ध और रोज की फुटकर लड़ाइयाँ–सब छोटी–मोटी तू–तू, मैं–मैं से ही शुरू हुईं और फिर फैलती गईं। कुछ माँगने और न देने पर भी झगड़े होते हैं। मुझे हैरानी इस बात की है कि इन सभी झंझटों से निपटने के लिए लड्डुओं से मदद क्यों नहीं माँगी गई। लड्डू से बड़ा शांति–दूत न पहले कभी हुआ है, न आगे होने की उम्मीद है। जब भी किसी से मनमुटाव हो, लड्डुओं का डब्बा भेजिए और उसका जादू देखिए।

अब लड्डू की साइज और संख्या पर आइए। लड्डू जितना बड़ा होगा, आपको उतना उदार बनाएगा। और जब ये संख्या में ज्यादा होंगे, तो आपको दूसरों से मिल–बाँटकर खाने की प्रेरणा देंगे। जो मिल–बाँटकर खाते हैं उनकी कीर्ति पूरे संसार में फैलती है। लोग उन्हें पसंद करते हैं, उनकी न्याय–बुद्धि, उदारता और सज्जनता की तारीफ करते हैं। आदमी को संसार में पैसे के अलावा और क्या चाहिए? तारीफ ही तो! और इसमें लड्डू आपकी मदद करते हैं।

लड्डू खाते–खिलाते ही आदमी खाया–पीया दिखने लगता है। जैसा कि आप जानते हैं, हमारे यहाँ पढ़े–लिखों

से ज़्यादा खाए–पीए लोगों को इज़्ज़त देने का रिवाज है। ऐसे में लड्डू आपको इज़्ज़तदार बनाने में भी मदद करते हैं। किसी नन्हे–मुन्ने लड्डू से इससे ज्यादा और क्या उम्मीद की जा सकती है!

यही वजह है कि बच्चा पैदा हो, बड़ा हो, कुछ करने–धरने लगे, ब्याह हो, अपने बच्चे हो, जमीन–जायदाद खरीदे–हर मौके पर लड्डू ही उन खुशियों की तस्दीक करते हैं। यदि ऐसे मौकों पर भी आपने लड्डू नहीं बाँटे, तो आपसे बड़ा मक्खीचूस कोई नहीं। आपकी इज्जत एकदम गरीबी रेखा के नीचे चली जाती है और मिलने–जुलने वाले यह मान लेते हैं कि आपसे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। और जिससे कोई उम्मीद न हो उसे इज्जत देना और उस पर वक्त बर्बाद करना, एक ही बात है।

लड्डू आपके सम्मान के प्रहरी हैं। ऐसे में यदि आपसे लड्डुओं की अपेक्षा की जा रही हो और अपेक्षा करने वाला लगातार जुटा हो, आपसे लड्डुओं की माँग करता हो, अपने जैसे दूसरे लड्डू–प्रेमियों को भी गोलबंद कर रहा हो, और उसका धीरज टूटने का नाम न ले रहा हो– तो उसे फौरन लड्डू खिलाने का इंतजाम करना ही शास्त्रों में समझदारी कहा गया है।

लड्डुओं पर लल्लूलाल भी रीझते हैं और भाषा–शास्त्री भी। देखिए, संस्कृत के किसी अनाम विद्वान ने लड्डुओं के बारे में कितनी मीठी बात कही है–

लड्डुस्निग्धरूपं पूर्णेन्दुस्वरूपं लड्डू
जगन्मोहनमजगन्मोहनम।
लड्डु ग्रासकरि क्षुधापहारि लड्डु चित्तोन्मादनम।।

इस श्लोक का हिंदी अर्थ यह है कि चिकने, पूर्ण चंद्रमा जैसे, संसार को मोहित करने वाले, ग्रास बनकर भूख मिटाने वाले लड्डू मन को उन्मत्त कर देते हैं।

तो आइए, आज लड्डुओं पर मन लगाएँ। आपका दिन लड्डुओं के समान मधुर हो। ◆

सेवानिवृत्त

वित्तीय वर्ष 2025–26 में सेवानिवृत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूचीः (1.04.2025 से 31.10.2025 तक)

क्रम सं.	नाम सर्व श्री	पदनाम	सेवानिवृति की तिथि
1.	ललित शंकर मिश्रा	पर्यवेक्षक	31.05.2025
2.	संजय कुमार श्रीवास्तव	व.ले.प.अ.	30.06.2025
3.	मनोज कुमार नं.– 01	व.ले.प.अ.	30.06.2025
4.	मो. शहाबुद्दीन	पर्यवेक्षक	30.06.2025
5.	शिव शंकर राय	पर्यवेक्षक	31.10.2025
6.	सुनील शंकर चौधरी	व.ले.प.अ.	31.10.2025

शोक संदेश

क्रम सं.	नाम	पदनाम	निधन की तिथि
1.	स्व. राजेश कुमार	पूर्व लेखापरीक्षक	07.04.2025

बिहुला-बिषहरी पूजा- साहस और समर्पण का प्रतीक

✍ अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

जब हम बिहार में लोक आस्था की बात करते हैं तो ऐसी कई परम्पराएं हैं जिससे हम अनभिज्ञ रह जाते हैं। अलग–अलग प्रदेशों में भिन्न–भिन्न देवी देवताओं की पूजा, उनके संबंध में लोककथाएँ, गीत, नाटक और मेलों का आयोजन बिहार की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाता है। भारत के बिहार राज्य के भागलपुर (तत्कालीन अंग प्रदेश की चंपा नगरी – वर्तमान में चंपानगर) में प्रचलित बिहुला–विषहरी पूजा इसी सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल अंग है। चंपानगर (भागलपुर) और सेमापुर (कटिहार) जैसे प्रमुख स्थानों में इससे जुड़ी मान्यताएँ और उत्सव मनाए जाते हैं। यह कहानी अंगिका–भाषी क्षेत्रों और बंगाल में भी एक प्रमुख लोककथा है। यह पूजा मुख्यतः नाग देवता तथा देवी मनसा (बिषहरी) को समर्पित है। इस पूजा की जड़ें लोककथाओं तथा लोकगीतों में पाई जाती हैं।

पूजा का उद्‌गम तथा पौराणिक कथा– बिहुला–विषहरी पूजा की यह लोककथा शिवभक्त व्यापारी चांदो (चंद्रधर) सौदागर के सातवें पुत्र लखिन्दर और उसकी पत्नी बिहुला की है। नागों की अधिष्ठात्री देवी मनसा ने चांदो से अपनी पूजा का आग्रह किया, पर उसने महादेव के अलावा किसी की पूजा से इनकार कर दिया। इससे क्रोधित होकर देवी ने नागों द्वारा चांदो के छह पुत्रों को डसवा दिया। सुरक्षा के सभी इंतजाम के बावजूद लखिन्दर को भी उसके विवाह की रात ही नागों ने डस लिया ।

सती बिहुला ने केले के पेड़ की नाव बनवाकर पति के शव के साथ गंगा यात्रा शुरू की। उसे कई कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं – महीनों तक नाव में यात्रा, शव का सड़ना, नाव का डूबना और जलजीवों का खतरा। किंतु अपनी अटूट निष्ठा, तपस्या और भक्ति से उसने देवी मनसा को प्रसन्न किया और लखिन्दर को जीवनदान मिला। यह कथा बिहुला को नारी शक्ति, समर्पण और प्रेम का प्रतीक बनाती है।

बिषहरी या मनसा देवी का महत्व – बिषहरी देवी, जिन्हें मनसा देवी भी कहा जाता है, नागों की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। मान्यता है कि उनकी पूजा करने से साँप के दंश से रक्षा होती है और परिवार में सुख–समृद्धि बनी रहती है। ग्रामीण परिवेश में, जहाँ खेत–खलिहान और नदी–किनारे साँपों का भय सदैव रहता था, मनसा देवी की पूजा एक सुरक्षा–विश्वास के रूप में स्थापित हुई।

यह पूजा केवल नागों से बचाव की आस्था तक सीमित नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के सह–अस्तित्व का संदेश भी देती है। यह हमें स्मरण कराती है कि धरती के हर जीव का अपना महत्व है और प्रकृति के प्रत्येक रूप का सम्मान आवश्यक है।

बिहुला बिषहरी पूजा का समय – यह पर्व सावन और भाद्र मास में, विशेषकर नाग पंचमी के आसपास, प्रमुख रूप से मनाया जाता है। अलग–अलग क्षेत्रों में इसकी तिथि और परंपराओं में भिन्नता होती है। कुछ स्थानों पर यह कई दिनों तक चलता है, जिसमें कथा–कीर्तन, लोकनाट्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

पूजा की परंपरागत विधि –

सबसे पहले खुले क्षेत्र में मिट्टी से नाग का प्रतीक बनाया जाता है, जिसके सामने देवी की प्रतिमा (मिट्टी, लकड़ी अथवा चित्र के रूप में) रखी जाती है। पूजा के दौरान दूध, लावा, फूल, नारियल आदि के भोग अर्पण सम्मिलित होते हैं। इसके बाद बिहुला–लखिन्दर की कथा का वाचन या गायन किया जाता है, जिसे 'बिषहरी गीत' कहा जाता है। कुछ स्थानों पर बिहुला की गंगा यात्रा को प्रतीकात्मक रूप से नाव द्वारा दर्शाया जाता है और अंत में एक लोकनाट्य (नाटक) का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी मुख्य पात्रों को रोचक ढंग से निभाया जाता है। इस पूजा की सौन्दर्यता इसकी सांस्कृतिक गंभीरता और समुदाय की भागीदारी में है।

सांस्कृतिक महत्व– यह पर्व धार्मिक आयोजन से आगे बढ़कर लोककला और सामुदायिक एकता का प्रतीक है। बिषहरी पूजा की लोकगीतों के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी चले आ रहे भक्ति, प्रेम और त्याग का भाव प्रबल होता है। साथ ही ग्रामीण जीवन में लोकनाट्य मंचन मनोरंजन के साथ सांस्कृतिक शिक्षा का माध्यम भी है। यह पर्व गाँव के हर वर्ग को एक सूत्र में बाँध देता है, जिससे आपसी सहयोग और एकता मजबूत होती है।

आधुनिक संदर्भ– शहरीकरण के कारण कुछ क्षेत्रों में इस पूजा का स्वरूप बदला है, परंतु ग्रामीण इलाकों में इसकी आस्था आज भी उतनी ही गहरी है। अब यह आयोजन धार्मिक महत्व के साथ–साथ सांस्कृतिक पर्यटन का हिस्सा भी बन रहा है। कई स्थानों पर स्थानीय प्रशासन और सांस्कृतिक संस्थाएँ इसे मेले और उत्सव के रूप में आयोजित करती हैं, जिससे लोक कला और परंपरा को नया जीवन मिलता है।

सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलू – बिहुला की कथा नारी के साहस और अडिग संकल्प का प्रेरक उदाहरण है। विपरीत परिस्थितियों में भी उसका संघर्ष यह दर्शाता है कि प्रेम और विश्वास मृत्यु से भी टकरा सकता है। ग्रामीण समाज में यह कथा स्त्री सशक्तिकरण का प्रतीक बन चुकी है। ◆

''जब मशीनें सोचने लगीं'' आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: खतरा या अवसर?

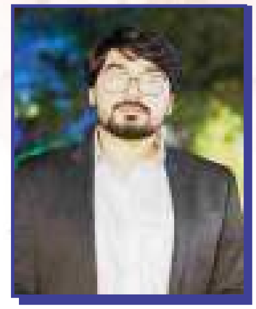

✍ **लेखराज मीणा**
लेखापरीक्षक

''भविष्य उनका है जो आज इसकी तैयारी करते हैं।'' यह बात यूँ तो जीवन के हर क्षेत्र पर लागू होती है, लेकिन मौजूदा समय में इसका सबसे अधिक प्रभाव तकनीक की दुनिया में हो रहे बदलावों पर दिख रहा है। आज जिस बदलाव ने सबको चौंकाया है, वह है – आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.)। मशीनें अब केवल आदेश मानने वाली वस्तुएँ नहीं रहीं, बल्कि अपने अनुभव से सीखकर निर्णय लेने लगी हैं। और यही कारण है कि लोग पूछने लगे हैं– ''क्या वाकई मशीनें हमारी नौकरियाँ छीन लेंगी?''

थोड़ा ठहरकर सोचिए– आज बैंक का काम हो, अस्पताल में रिपोर्ट जाँचनी हो, ग्राहक सेवा देनी हो या ट्रैफिक संभालना हो, हर जगह ए.आई. की झलक नजर आ रही है। पहले जहाँ इंसान घंटों बैठकर हिसाब–किताब करता था, वहीं अब कुछ सेकंड में सॉफ्टवेयर यह काम निपटा देता है। यह बदलाव जितना आश्चर्यजनक है, उतना ही चिंताजनक भी है। आखिर रोजगार ही तो हर परिवार की रीढ़ है।

लेकिन जैसा कि कहा जाता है, ''एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा खुल जाता है।'' ए.आई. के साथ भी ठीक वैसा ही हो रहा है। हाँ, यह सच है कि कुछ दोहराए जाने वाले काम मशीनें कर लेंगी – जैसे डाटा एंट्री या कॉल सेंटर के काम – पर इसके साथ ही यह नई नौकरियों का एक समुद्र भी खड़ा कर रही है। आज 'डेटा साइंटिस्ट', 'ए.आई. इंजीनियर', 'साइबर सिक्योरिटी विशेषज्ञ' जैसी भूमिकाओं की माँग आसमान छू रही है। आने वाले समय में तो शायद ऐसी नौकरियाँ पैदा होंगी, जिनकी हम आज कल्पना भी नहीं कर सकते।

महात्मा गांधी ने कहा था – ''भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज क्या करते हैं।''यही संदेश हमें याद दिलाता है कि केवल डरने से काम नहीं चलेगा, बल्कि सीखने और समय के साथ खुद को ढालने से ही हम आने वाले कल के लिए तैयार हो पाएँगे।

असल चुनौती यह है कि हमें अपने कौशल को बदलते समय के साथ ढालना होगा। केवल डिग्री से काम नहीं चलेगा। अब जरूरी है – डिजिटल ज्ञान, प्रोग्रामिंग की समझ, समस्या सुलझाने की क्षमता और सबसे बढ़कर, सृजनात्मकता। जैसा कि आइंस्टाइन ने कहा था, ''कल्पना ज्ञान से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।'' मशीनें चाहे कितनी भी तेज क्यों न हो जाएँ, कल्पना शक्ति और संवेदनशीलता इंसान के पास ही रहेगी।

इतिहास गवाह है कि हर तकनीकी क्रांति शुरू में डर पैदा करती है। जब कंप्यूटर आए थे तो लगा था कि लाखों लोग बेरोजगार हो जाएँगे, लेकिन हुआ ठीक उल्टा – नए उद्योग खड़े हुए और लाखों–करोड़ों लोगों को काम मिला। ठीक वैसे ही ए.आई. भी नए अवसरों का रास्ता खोलेगा। फर्क बस इतना है कि इस बार हमें और अधिक तेजी से अपने कौशलों को नया रूप देना होगा।

सच तो यह है कि ए.आई. हमें उन कामों से मुक्त कर देगा, जो नीरस और दोहराव वाले हैं। डॉक्टर मशीन को रिपोर्ट जाँचने देंगे और वे खुद मरीज से बात करेंगे। शिक्षक कॉपी जाँचने का काम छोड़कर बच्चों की प्रतिभा को निखारने में समय लगाएँगे। यानी मशीन अपना काम करेगी और इंसान अपनी असली ताकत– रचनात्मकता और संवेदनशीलता– में और भी चमकेगा।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहा करते थे– ''सपना वह नहीं है जो आप सोते समय देखते हैं, सपना वह है जो आपको सोने नहीं देता।'' यही सपना हमें नए कौशल सीखने, नई राहें खोजने और बदलते दौर में अपनी जगह बनाने की प्रेरणा देता है।

कहावत है– ''परिवर्तन ही जीवन का नियम है।'' यदि हम इसे स्वीकार करेंगे तो ए.आई. हमारे लिए खतरा नहीं, बल्कि वरदान बन जाएगा। जो लोग सीखने, बदलने और आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं, भविष्य उन्हीं का है। और भविष्य का यह सफर इंसान और मशीन, दोनों के मिलकर चलने से ही सुहाना होगा।

"तकनीक के संग बढ़ें कदम, यही समय की माँग है,
सीखो, बदलो, बढ़ो निरंतर, यही असली पहचान है।
मशीनें साथ निभाएँगी, जब इंसान आगे बढ़ेगा,
ज्ञान और कर्म के बल पर ही भविष्य नया गढ़ेगा।"

मानव मूल्य, समाज और संन्यास का दर्शन

✍ **दिलीप कुमार**
कनिष्ठ अनुवादक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में उसकी स्थिति हमेशा किसी न किसी मूल्यांकन के अधीन रहती है। ऐसा कोई नहीं जिसे कभी किसी कसौटी पर परखा नहीं गया हो क्योंकि समाज, परिवार, मित्र और यहाँ तक कि हम स्वयं भी अपना परीक्षण करते रहते हैं। यह मूल्यांकन स्वाभाविक है, क्योंकि हर व्यक्ति अपने संसाधनों – समय, भावनाएँ, धन और ऊर्जा को सही जगह निवेश करना चाहता है। लेकिन क्या यह मूल्यांकन मनुष्य की वास्तविकता को पूरी तरह परिभाषित कर सकता है? क्या हम केवल एक "उत्पाद" हैं, जिसे खरीदा, बेचा या किसी मानक पर आंका जाना चाहिए? या फिर आत्मा का अस्तित्व इससे परे कुछ और भी है? यही प्रश्न हमें भौतिकतावाद और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन की ओर ले जाते हैं।

समाज में मूल्यांकन और तुलनात्मकता – मनुष्य का मूल्यांकन अक्सर केवल बाहरी कारकों के आधार पर किया जाता है – उसकी उपलब्धियाँ, वित्तीय स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा या व्यक्तिगत संबंधों की गुणवत्ता। माता–पिता अपने बच्चों को परखते हैं, क्योंकि वे उनमें अपने सपनों का निवेश देखते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपको आपकी सफलता और व्यक्तित्व के आधार पर परखते हैं। समाज आपकी उत्पादकता, उपभोग क्षमता और बाहरी व्यक्तित्व के आधार पर आपको आंकता है। पर यह पूरी प्रक्रिया एक पूंजीवादी दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें हर व्यक्ति को एक "वस्तु" के रूप में देखा जाता है, जिसका मूल्य समय और परिस्थितियों के अनुसार घटता–बढ़ता रहता है। इस व्यवस्था में मनुष्य स्वयं को बाजार में बिकने वाली वस्तु की तरह देखने लगता है और लगातार अपने मूल्य को बनाए रखने या बढ़ाने की दौड़ में लगा रहता है। लेकिन क्या यह मूल्यांकन वास्तविक है?

तुलनात्मकता से ऊपर आत्मा की संप्रभुता – जब कोई व्यक्ति अपने भीतर के मूल्य को समझता है, तो उसे एहसास होता है कि उसकी वास्तविक कीमत किसी बाहरी न्याय/निर्णय से निर्धारित नहीं की जा सकती। यदि आप अपने आप को केवल एक उपभोक्ता वस्तु की तरह प्रस्तुत करेंगे, तो समाज आपको वैसा ही मानेगा। लेकिन यदि आप अपने मूल्य को इस तुलनात्मकता से ऊपर उठा लेते हैं, तो आप स्वयं में एक संप्रभु सत्ता बन जाते हैं। यह वही अवस्था है जहाँ व्यक्ति इतना मूल्यवान हो जाता है कि समाज उसे 'खरीदने' में असमर्थ हो जाता है। एक सच्चा साधक या संन्यासी वही होता है जो इस सत्य को समझ लेता है। वह इतना मूल्यवान बन जाता है कि समाज की सारी भौतिक संपत्तियाँ भी उसे आकर्षित नहीं कर पातीं। उसकी आत्मा स्वतंत्र हो जाती है और वह इस भौतिक जगत की सीमाओं से परे चला जाता है।

सांसारिकता और आध्यात्मिकता के बीच का संघर्ष – भौतिकतावादी दुनिया अक्सर तुलना और प्रतिस्पर्धा पर आधारित रहती है। किन्तु कुछ सत्य ऐसे होते हैं जिनका कोई विकल्प नहीं होता। जैसे– साँस लेनाः इसमें आपका कोई विकल्प नहीं होता। ऑक्सीजन आवश्यक है और कोई अन्य विकल्प आपके जीवन का आधार नहीं बन सकता। प्राकृतिक सत्यः सूर्य का प्रकाश, जल का प्रवाह, पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति – ये सत्य निर्विकल्प हैं। इसी प्रकार, जब कोई व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है, तो वह भी एक निर्विकल्प सत्य बन जाता है – वह समाज के लिए एक "विकल्प" नहीं रह जाता, बल्कि एक "अपरिहार्य वास्तविकता" बन जाता है।

संन्यास : मूल्य से परे की अवस्था– जब कोई व्यक्ति इतना आत्मनिर्भर और आत्मज्ञानी बन जाता है कि समाज उसे अपनी तुलनात्मकता के दायरे में नहीं रख सकता, तो वह संन्यास की अवस्था प्राप्त कर लेता है। यह संन्यास केवल गेरुआ वस्त्र धारण करने का नाम नहीं है, बल्कि यह मानसिक और आत्मिक स्वतंत्रता की अवस्था है। यह वह स्थिति है जहाँ व्यक्ति किसी भी सामाजिक मूल्यांकन से ऊपर उठ जाता है और स्वयं में पूर्ण हो जाता है। तब कहा जाता है–

"जिसे कोई नहीं खरीद सकता, वही सच्चा मुक्त है।"

ऐसे व्यक्ति के सामने पूंजीपति, व्यापारी, नेता और समाज के तमाम निर्णायक शक्ति–स्रोत भी निष्फल हो जाते हैं। उसकी उपस्थिति ही इस भौतिकतावादी जगत को उसकी सीमाओं का एहसास करा देती है। यही वह अवस्था है जब कोई व्यक्ति केवल "एक उत्पाद" नहीं रह जाता, बल्कि वह एक ऐसी शक्ति बन जाता है जो इस पूरी व्यवस्था को चुनौती दे सकती है।

श्री रामेश्वरम और श्री तिरुपति बाला जी

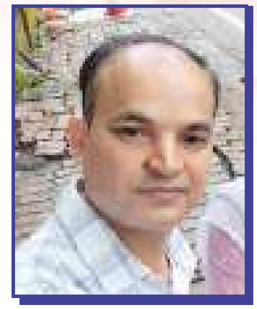

✍ **योगेश कुमार मिश्र**
सहायक निदेशक (रा.भा.) महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात) का कार्यालय, राँची

भारत केवल मेरे लिए इस कारण से पूज्य नही हो जाता कि यहाँ मेरा जन्म हुआ है वरन भारत के प्रति संपूर्ण विश्व का भाव भी वही है जो मेरे मन में है। पूरा विश्व भोग के नित नये आयामें पर चढ़कर नृत्य करता थक जाता है तब उस थकान को मिटाने के लिए भारत की ओर आशा भरी दृष्टि से देखता है और जब उसकी आशा पूर्ण होती है तब वह विस्मित हो कर श्रद्धा से नत हो जाता है। शेष संसार दैहिक तथा भौतिक तल पर अपनी इमारतें बनाता–बिगाड़ता है वहीं भारत में आत्मिक तल पर अशेष आनंद को प्राप्त करने पर बल दिया जाता है। सब यही चाहते है कि जो कुछ मुझे प्राप्त हो वह स्थाई हो, घटे नही, नाश न हो पर जिस नाशवान वस्तु की आधारशीला निर्माण होना है वह नष्ट क्यों कर न होगा। पाप और पूण्य दोनों क्षय होते है पर आत्मा के तल पर प्राप्त जो आनन्द और आध्यात्म हैं वह शेष नही हो सकता क्योकि उसका आधार अनन्त है।

भारत में सूक्ष्म रुप से साधना के तत्व विधमान हैं ज्ञान, भक्ति, वैराग्य तथा तप सूक्ष्मता से कण–कण में निवास करता है वहीं इसके स्थूल रुप तीर्थो, मंदिरो और देवस्थलों में है जहॉ से सूक्ष्मता का मार्ग प्रशस्त होता है। इन्ही द्वारों के पुण्य स्थलों के दर्शनार्थ हमने दक्षिण की यात्रा का निर्णय किया। सनातन धर्म के चार धामों में से एक धाम 'रामेश्वर' दक्षिण में है। दक्षिण की यात्रा का मुख्य उद्देश्य श्री रामेश्वरम का दर्शन था किन्तु तिरुपति बाला जी, मदुरै की मीनाक्षी देवी तथा कन्याकुमारी भी ऐसे देवस्थल है जो दक्षिण भारत की यात्रा में अत्यंत महत्वपूर्ण है अतः इनका दर्शन लाभ भी लेना ही था।

कोलकाता से चेन्नई के जाने के लिए जैसे ही हम लोग स्टेशन पहुँचे हमने पाया हमारे सामान में से खाने–पीने का बैग गायब है। चुँकि घर की महिलाओं ने रास्ते के लिए जो सुखा भोजन तैयार किया था उसमें उन्हे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी सो उन्हे बहुत दुःख हो रहा था। पिता जी भी गुस्सा कर रहे थे वे समान के प्रति सावधान तथा सजग रहते हैं लापरवाही उन्हें पसंद नही है स्वयं समय के पाबंद हैं और प्रायः सावधान ही रहते हैं तथा दुसरों को भी इसी तरह देखना पसंद करते है।

यह जून का अंतिम सप्ताह था गर्मी थी और रास्ते में भी इसके भीषण होने की आशंका थी उपर से पाँच महीने के राधव हमारे साथ थे, वस्तुतः केन्द्रीय कर्मी होने के नाते मुझे अपने छोटे पुत्र के जन्म के कारण पंद्रह दिवस का पितृत्व छुट्टी मिली थी। इतने छोटे बच्चे के साथ यात्रा करना अपने आप में चुनौती थी। गर्मी का असर कम हो इसके लिए हमलोगों ने एसी में टिकट करवाया था पर पूरे यात्रा में मौनसून अपने चरम पर था। प्रकृति की इसी बात पर मुझे अचरज होता है आप जो उम्मीद/आशा करते हैं उसके उलटा होता है। बड़े आराम से हम सभी चेन्नई स्टेशन सुबह 4 बजे भोर में पहुँचे। इसी स्टेशन से तिरुपति बाला जी जाने के लिए 6:30 बजे ट्रेन थी। कुछ देर के इंतजार के बाद हमलोग तिरुपति के लिए प्रस्थान किए। तीन से साढ़े तीन घन्टे के बाद हमलोग अपने गन्तव्य तक पहुँच गए। तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम् ट्रस्ट की ओर से ठहरने की व्यवस्था तथा विशेष दर्शन की व्यवस्था की जाती है। यह ऑनलाईन बुक किया जाता है, हमलोगों ने दो कमरा रिजर्व करा लिया था। हमलोग कुल सात व्यस्क तथा दो बालक थे। जिसमें में, पिता जी तथा मेरा परम मित्र राकेश एक कमरे में और दूसरे में राकेश की माता जी मेरी माँ, श्रीमती और दोनों बच्चे। तिरुपति तिरुमाला द्वारा संचालित निकुंज एवं गोविन्दम् दोनों ही विश्रमालय आधुनिक सुविधाओं से लैस है। रात्रि विश्राम के उपरांत हम सब स्नानादि कर के तिरुपति बाला जी के दर्शन के लिए चल पड़े। एक जीप को किराए पर लिया गया। तिरुमाला पर्वत पर चढ़ने के पूर्व ही गाड़ी और यात्रियों को पूरा चेक किया जाता है। सुरक्षा का यह अभूतपूर्ण बंदोबस्त मैंने वैष्णों देवी की यात्रा में भी देखा था। यह पूरा क्षेत्र अत्यंत साफ सुथरा था और यहाँ का सौन्दर्य अनुपम था। दो घंटे के भीतर हमलोग बाला जी के मंदिर में थे। जो लोग स्पेशल दर्शन का टिकट लेते हैं उन्हे पारम्परीक परिधान पहनना होता है। दर्शन के लिए प्रवेश के बाद हमलोग कम से कम दो घंटे पंक्ति में खड़े रहे। पंक्ति में खड़े रहने के अलावा वहाँ पर बड़े–बड़े हॉल है जिसमें बैठने

की सुविधा होती है। तिरुपति बाला जी गोविन्द के अवतार हैं। कहा जाता है कि एक बार माता लक्ष्मी भगवान विष्णु से रूठ कर कहीं चली गई। ऐसे में भगवान श्रीहीन हो गए। और धन की आवश्यकता के लिए कुबेर से उधार लिया। वह कर्ज इतना बड़ा था कि कहा जाता है कि आज भी भगवान श्रीनिवास कर्ज में हैं। भक्त जन अपने आराध्य की ऋण मुक्ति के लिए उन्हे स्वर्ण रजत और रुपए पैसे चढ़ाते है। एक तरफ भगवान को उनके भक्त उनकी ऋण मुक्ति के लिए धन अर्पित करते है बदले में श्रीनिवास उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। शास्त्रों में यहाँ तक कहा गया है कि बिना इनके दर्शन मुक्ति की कामना पूर्ण नहीं होती। लम्बी कतार शनै–शनै छोटी होती गई और वह समय भी आ गया जब हमलोग श्री वेंकटेश भगवान के समक्ष होले ही वाले थे। द्वार पर अत्यंत भीड़ होने की वजह से हमारे परिवार के वृद्ध तथा बालक कष्ट में थें। पर नारायण की कृपा इतनी शीघ्रता से होगी इसकी आशा हमें न थी पर उनकी लीला तो वे ही जानतें है। राकेश की माता जी को विशेष परेशानी नहीं थी पर मेरी माँ शरीरिक रुप से कमजोर और अस्वस्थ भी थी और हम सब में सबसे कम उम्र के मेरे छोटे पुत्र राघव को परेशानी हो रही थी। मंदिर के गर्भ गृह से से एक पुजारी महाशय आए और मेरी माँ तथा मेरी पत्नी जिसकी गोद में राघव था उन्हे बीच कतार से अंदर बुला लिया फलतः वे भारी भीड़ की परेशानी से बच गए और उन तीनों ने खूब स्थिर हो कर भगवान की मोहिनी मूरत का दर्शन किया यह भगवान की विशेष कृपा थी। मेरी गोद में मेरा बड़ा लड़का सुयोग था। सब ने अच्छी तरह दर्शन किया। भगवान की मूर्ति काली थी पर उनके श्री अंग में विशेष चमक थी। कमल आदि पुष्पों से सुसज्जित गोविन्द मोहित कर रहें थे। ऐसा लग रहा था मानों वे कह रहे हों संसार सागर तथा मेरी मायाजन्य जो यह स्वप्न चारों ओर पसरा हुआ है वह मेरे दर्शन मात्र से हट जाएगा।

करीब पिछले वर्ष मेरे मन में आया था कि किसी तरह से भगवान वेंकटेश के दर्शन हो जाते तो जीवन कृतार्थ हो जाता फिर मेरे मन में ऐसा लग रहा था कि आखिर यह कैसे संभव होगा, कैसे जाऊंगा, कहाँ रुकूँगा संतान छोटे हैं, माता पिता वृद्ध हैं। यह सब सोच कर मन मार के बैठ जाता था। फिर सोचा क्यों न यह भार उन्ही के श्री चरणों में रख दूँ। एक समय ऐसा भी या गया कि भक्त ने दर्शन की इच्छा की और यह संभव भी हो गया, यह दर्शन जो उन्होने करवाया उस पर अभी तक विश्वास नही होता कि यह इतना सुगम और सुलभ कैसे हो पाया। सच है जब वे कुछ चाहते हैं तो ऐसे ही चमत्कार होता जाता है। मंदिर परिसर में मैनें सब से कहा जो मालिक से मांगना है मांग लो। ये बड़े दयालु हैं तथा देने में इनके समान कोई नही है। सभी ने अपनी कामनाएं, प्रार्थनाएँ प्रभु के समक्ष रख दी। पिता जी से जब मैनें कहा तो वे बोले मैं क्या माँगु ...... यही साधना की चरम स्थिति है जब भक्त को हर ओर ईश्वर की कृपा से अभाव का ही अभाव दिखने लग जाए। सभी लोग दर्शनोंपरांत बैठ कर आराम करने लगे और राकेश जी प्रसाद रुप में जो बाला जी के लड्डू होते है उसे लाने चले गए। उस लड्डू का आस्वादन करने के बाद जो अनुभव हुआ वह शब्दों में वर्णन करने लायक नहीं है इतने मीठे, इतने स्वादिष्ट और इतने सुगंधित। ऐसा लगा सचमुच यह प्रसाद भगवान का भगवान के लिए तथा भगवान द्वारा ही बना हुआ है। अत्यंत मधुर, अत्यंत सुस्वाद। यहाँ से कृतार्थ हो कर हमलोग अपने आवास पर लौट आए।

पुनः अगले दिन रामेश्वरम के लिए यात्रा आरंभ किया गया। चेन्नई उतर कर एक और दूसरे स्टेशन से रामेश्वरम के लिए ट्रेन मिली। शाम पाँच बजे यह ट्रेन रामेश्वरम् के लिए रवाना हुई और हमलोग चार बजे भोर में स्टेशन पहुँच गए। वहॉ से ऑटो ले कर सीधे रामेश्वरम मुख्य मंदिर के पास पहुँच गए। सभी को मंदिर के पास रोक कर राकेश और मैं ठहरने के लिए होटल की तलाश करने लगे। पास में ही एक बड़ा सा हॉल मिल गए। व्यवस्था सुंदर थी। नित्यक्रिया से निवृत होकर मंदिर के पश्चिमी हिस्से की ओर गए जहाँ समुद्र का किनारा था। मंदिर के प्रांगण में 22 तीर्थो का कुण्ड है हर कुण्ड के जल से स्नान का अलग–अलग महत्व है। स्नान की शुरुआत समुद्र स्नान से आरंभ होता है। समुद्र स्नान के पश्चात हम लोग टिकट की लाइन में खड़े हुए। बाइस कुण्ड में स्नान करने का टिकट 30/– रुपए मात्र है। थोड़ी लंबी लाइन थी। सभी तीर्थ के कुण्ड स्नान आनंददायी तो है पर थका देने वाला थे। उपर से पाँच महीने का बालक। सभी स्नान के बाद हम सब पुनः मंदिर चले। इस बार भगवान राम द्वारा स्थापित शिवलिंग जिसे रामेश्वर के नाम से जाना जाता है उनके पवित्र दर्शन हो हुए। अत्यंत पवित्र, मध्यम आकार का शिवलिंग, प्रसाद में चरणामृत और भस्म का दर्शन–सेवन से हमारा यह जीवन सफल हो गया। भारत के चार धामों में से एक श्रीरामेश्वरम का दर्शन अनेक जन्मों के पाप–ताप संताप को हर लेने वाला है। जहाँ स्वयं त्रिलोक के नाथ श्री राम जी ने जगन्नमाता श्री सीता जी के साथ भगवान भूतनाथ की स्थापना और अर्चना की वह कितना पूण्यफल दायी और मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त करने वाला है। यह किसके वश का है कि उनकी महिमा का ठीक ठीक वर्णन कर सके? शाम को रामेश्वरम के अन्य मंदिरों के दर्शन के लिए हमलोग निकले जिसमें सबसे रमणीक स्थान धनुषकोटी था। उछलती हुई लहरें जब किनारे से टकराती हैं तो वातावरण में उर्जा का संचरण हो जाता है। समुद्र की खूबसूरती अपने आप में बहुत आकर्षक व लोमहर्षक होता है। फिर रात्रि विश्राम के बाद हमलोग मदुरै के लिए चल पड़े। मदुरै में थोड़ी गर्मी लग रही थी पर श्री मीनाक्षी मंदिर में प्रवेश के बाद सब सामान्य लगने लगा। चाहे वह रामेश्वर मंदिर हो या मीनाक्षी देवी का मंदिर सब बेजोड़ और स्थापत्य कला का जीता–जागता प्रमाण है। मुगलकाल में दक्षिण की तरफ मंदिरों पर हमले कम हुए। दक्षिण भारत के

लोग ईमानदार, नैष्ठिक और धार्मिक विचार के लगे। इनमें आत्मीयता के भाव भरे हुए थे। श्री मीनाक्षी माता जगदम्बा पार्वती का एक नाम है। वहाँ भगवान सदाशिव का भी मंदिर है। मदुरै से चेन्नई होते हुए हमलोग कोलकाता चले आए। रास्ते में जितनी सीटें आर.ए.सी. थी सभी कनफर्म हो गयी यह भी ईश्वर की विशेष अनुकंपा थी।

आज भी जब हमलोग दक्षिण के यात्रा की चर्चा करते है तब ऐसा लगता है मानो यह कल की ही बात हो। इतना सुखद और संतोषजनक यात्रा अपने प्रदेश में भी नही हो पाती जबकि यह भाषा के दृष्टिकोण से अलग प्रदेश ही था।

माता पिता के साथ देवस्थलों में जाना विशेष पूण्यवर्धक और जीवन में सुख शांति के विस्तार को बल देने वाला होता है। इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका राकेश की थी। आने जाने के टिकट से लेकर पूरी योजना उसी की थी। दूसरी भूमिका मेरे छोटे बेटे की थी क्योकि उसी के जन्म लेने की वजह से मुझे पितृत्व अवकाश मिल सका और उसी अवकाश का लाभ उठाते हुए इतनी बड़ी यात्रा हमलोगों ने सफलता पूर्वक पूर्ण की। पूरे यात्रा में यह बालक सानंद खेलता रहा और कही भी परेशान नहीं किया।

राकेश की माता जी, मेरे माता पिता ये सभी साक्षात देवता ही है जब स्वयं ये साथ थे तो यात्रा पर ईश्वर की अनुकंपा क्यों न होती। विशाखापतनम में सुश्री सुदीप्ता जी ने आंध्रा भोजन पैक करा के ट्रेन में पहुँचा दिया। वह भोजन तथा मिष्टान्न इतना स्वादिष्ट था कि रास्ते भर उसकी चर्चा होती रही इस यात्रा में उनका भी कोटिशः धन्यवाद है। ईश्वर से यही कामना है कि वे अपनी कृपा दृष्टि सब पर बनाएँ रखें।

अंततः

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।।

◆

—सेजल गौरव
पुत्री श्री शैलेन्द्र चंद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बरसात (बूँदा-बाँदी)

✍ उत्तम नारायण
लेखापरीक्षक

बरसात है, तो शोर तो होना ही है। बस इतना ही नहीं, जब कहीं पानी भर जाता है तो उस पर बुलबुले बनते हैं, जो अधूरेपन का अहसास दिलाते हैं। अब अगर सड़क पर हों तो बरसात कुछ और लगती है, घर पर हों तो कुछ और। गाँव में आम के पेड़ की सबसे ऊपरी टहनी पर हों तो कुछ और ही, और रात को छत पर सोते वक्त ठंड में यह कुछ अलग ही लगता है। आपको बता दें, यह दरअसल रमणीय है। बरसात का रूप कोमल और मनोहर है; उसमें रंग ऐसे घुलते हैं मानो हमें अपने ही रंग में ढालना चाहते हों। यही कारण है कि हम बारिश से बचने के बजाय उसमें भींगना पसंद करते हैं। हमने वर्षों से छत और छाते का सहारा नहीं लिया ताकि हम थोड़े–थोड़े भीग सकें। बारिश की बूंद भी बड़ी अजीब होती है–गिरते समय छम–छम की मधुर ध्वनि करती है, और जब खिड़की के शीशे पर आ गिरती है तो तुरंत लुप्त नहीं होती, बल्कि अपने पीछे एक हल्की–सी लकीर छोड़ जाती है। बादल गिर नहीं पाता है तो गरजता है।

बरसात सबसे पहले अरमानों पर आती है, झूमती हुई सरसराती हवा के साथ। चूंकि गर्मी पहले आती है, तो वह जाती नहीं है बल्कि उसी गर्मी से उठते हुए बादलों के साथ कुछ दूर से बरसात आती है। कई बार बादल बिना बिजली की गड़गड़ाहट के नहीं रहते। उस दौरान हवा में फैली धूल भी धुलकर मिट जाती है और लोग आसमान की ओर एकटक निहारते रहते हैं। सच तो यह है कि बारिश में भीगता वही है, जिसके भीतर कोई न कोई तपन या पीड़ा होती है। सहज भाव से भींगना भी अपने आप में एक कला है, एक प्रेरणा है। अनाड़ी चौक से रास्ता मोड़कर बाजार में छिप जाता है ताकि जूते मैले न हो जाएँ। डाकिया चिट्ठी बचाता है और किसान अनाज। तपन ही बरसात माँगती है, इसमें कोई नई बात थोड़े ही है। बारिश अब थमने लगी है–इस बार बिना उसूल के आई थी।

बरसात खुद में एक सम्पूर्ण दर्शन है। शायद ओशो का ज्यादा ध्यान इस ओर नहीं गया, वरना पता चलता कि असली मजा बरसात में हल्की हवा के झोंके में बह जाना है। नदी, पहाड़, घर के लोग, दादा–दादी की उँगली पकड़े रहना, आम के पेड़ के नीचे चींटी का खोता गिरना, काला बादल, भयंकर आँधी और उसमें आमों का इधर–उधर उड़ना–इन सबको घंटों देखते रहना, इससे ज्यादा मजेदार कुछ नहीं। लेकिन यह एक व्यक्तिगत अनुभव है। मैं प्रकृति की पूजा करता हूँ, उसी से बना हूँ। सबके अपने–अपने विचार हैं, ओशो के भी। हालाँकि मैं ओशो की तरह दिल की बात भगवान बनकर नहीं कहता, शायद कहूँ तो जूते पड़ जाएँ। खैर, भाव मौलिक हैं, श्रृंगार बाह्य है और बाह्य सांकेतिक, जो मूल से अलग नहीं है।

तरह–तरह की बातें हैं। पढ़ा था कि शिलांग में बहुत बारिश होती है, तो शिलांग जाकर बारिश देखने का मन करता था– वहाँ का नजारा बड़ा विहंगम है। मेरा दोस्त बंबई गया था तो उसने कहा कि यहाँ आ जाओ, यहाँ सही मजा है। हाथ की रेखाएँ और हवा में हाथ को घुमाते हुए जब दिमाग पर जोर देता था, तो ऐसा लगता था कि मजा भौतिक है, आनंद पारलौकिक। बरसात यहाँ की हो या वहाँ की, भींगना होगा तो उतना ही भीगूँगा। नास्तिक कभी–कभी जड़ में झोल नापता है और दीवारों पर आकार बनाकर दुनिया को गिराता है। मैं आस्तिक हूँ –मेरा गुरूर तो पत्थर के सामने भी धूल के कण के समान है। कभी मेंढक की टर–टर भी बरसात की उत्तम झलक दिखाने के लिए एकदम सही लगती है। ◆

पंचायती राज व्यवस्था का सफर

✍ **रवि प्रभात**
कनिष्ठ अनुवादक

भारत गांवों का देश है। वर्ष 2011 के जारी आँकड़े बताते हैं कि भारत की 61.5 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है तथा रोजी–रोटी के लिए कृषि पर निर्भर रहती है। पंचायती राज व्यवस्था इसी परिदृश्य की वजह से मजबूत कानूनी व्यवस्था समझी जाती है, जो गांव की आंतरिक समस्याओं को कानूनी रूप से सुलझाने के लिए अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। पंचायती राज व्यवस्था ने लंबी यात्रा तय करते हुए कानूनी रूप धारण किया। अतः यह जानना समीचीन है कि किस प्रकार पंचायती राज व्यवस्था ने लंबी यात्रा तय करते हुए कानूनी रूप धारण किया।

पंचायती राज व्यवस्था की जड़ अंग्रेजी काल में ही है, क्योंकि लॉर्ड रिपन के समय में वर्ष 1882 में जिला बोर्डों की स्थापना की गई थी। इसलिए लॉर्ड रिपन को स्थानीय स्वशासन का जनक माना जाता है, क्योंकि पंचायती राज व्यवस्था उन्हीं के समय शुरू हुई थी। आजादी के बाद जब इस दिशा में प्रयास किए गए तो यह प्रयास वर्ष 1993 में जाकर फलीभूत हुआ। यह एक लंबी यात्रा थी, जिसमें पंचायती राज व्यवस्था ने इतने वर्षों के बाद कानूनी रूप धारण किया।

आजादी के बाद सबसे पहला प्रयास स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। इसके लिए उन्होंने दो कार्यक्रम चलाए – वर्ष 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम तथा 1953 में राष्ट्रीय प्रसार सेवा। यह दोनों ही योजनाएँ महात्मा गांधी जयंती अर्थात 2 अक्टूबर को प्रारंभ की गई थीं, लेकिन दोनों ही कार्यक्रम असफल रहे। इसके बाद पंडित नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में ही वर्ष 1957 में बलवंत राय मेहता समिति का गठन किया गया। यह समिति पंचायती राज व्यवस्था के भविष्य के लिए सूर्य की भाँति पथप्रदर्शक सिद्ध हुई। इस समिति ने त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की सिफारिश की, जिसमें ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति तथा जिला स्तर पर जिला परिषद अथवा जिला पंचायत शामिल थी। समिति की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने राज्यों को इसे अपनाने के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप, स्वतंत्र भारत के दो राज्य – राजस्थान तथा आंध्र प्रदेश – ने इस व्यवस्था को सबसे पहले लागू किया। राजस्थान के नागौर जिले के बगदरी गांव में 2 अक्टूबर 1959 को यह व्यवस्था लागू की गई और इस प्रकार राजस्थान भारत का पहला राज्य बना जिसने पंचायती राज व्यवस्था को लागू किया। वहीं, आंध्र प्रदेश ने 11 अक्टूबर 1959 को इसे लागू किया। बलवंत राय मेहता के योगदान को देखते हुए उन्हें भारत के पंचायती राज व्यवस्था का वास्तुकार कहा जाता है तथा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का जनक भी कहा जाता है।

कालांतर में बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिशें विफल होने लगीं क्योंकि भारत में अशिक्षा और जन–जागरूकता की कमी बड़ी बाधा बनी। आगे चलकर मोरारजी देसाई के प्रधानमंत्रित्व काल में अशोक मेहता समिति (1977) का गठन हुआ। इस समिति ने पंचायती राज व्यवस्था के लिए दो स्तरीय रूपरेखा सुझाई तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण की सिफारिश की। परंतु मोरारजी देसाई की सरकार 1979 में गिर गई, जिससे समिति की सिफारिशें गौण हो गईं।

फिर आई राजीव गांधी की सरकार, जिन्होंने पंचायती राज व्यवस्था को लागू करने के लिए एक समिति का नए सिरे से गठन किया। उस समिति का नाम था एल. एम. सिंघवी समिति। इस समिति का गठन वर्ष 1986 में किया गया था। इस समिति की मुख्य सिफारिश यह थी कि पंचायती राज व्यवस्था त्रिस्तरीय हो – अर्थात ग्राम स्तर पर, अनुमंडल (ब्लॉक) स्तर पर और जिला स्तर पर। इसके साथ ही उन्होंने कुछ नए सुझाव दिए, जैसे ग्राम न्यायालय का गठन हो, राज्य चुनाव आयोग का गठन हो तथा सबसे अनोखा और महत्वपूर्ण सुझाव यह कि पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा मिले। पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा देने का यह सुझाव युगांतकारी था।

राजीव गांधी की सरकार ने एल. एम. सिंघवी

समिति की सभी सिफारिशों को लागू करने के लिए एक और समिति बनाई। उस समिति का नाम था पी. के. थुंगन समिति। यह समिति वर्ष 1989 में गठित की गई थी। पी. के. थुंगन समिति ने भी एल. एम. सिंघवी समिति के सुर में सुर मिलाते हुए यह सुझाव दिया कि पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिया जाए। इस प्रकार पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिए जाने का मार्ग इन दोनों समितियों ने प्रशस्त किया।

राजीव गांधी ने पी. के. थुंगन समिति की सिफारिश पर 1989 में 64 वाँ संविधान संशोधन विधेयक संसद में पेश किया था। लोकसभा में बहुमत के कारण यह बिल पास हो गया, लेकिन राज्यसभा में यह पास नहीं हो पाया क्योंकि राज्यसभा में राजीव गांधी की सरकार के पास बहुमत नहीं था। किसी भी विधेयक को कानून बनाने के लिए लोकसभा और राज्यसभा दोनों में इसका पास होना जरूरी होता है। इसलिए इन संवैधानिक बाधाओं के कारण यह बिल पास नहीं हो सका। इस प्रकार इस समिति की सिफारिश भी फलीभूत नहीं हो सकी और 64वाँ संविधान संशोधन, जो पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए लाया गया था, वह धरा का धरा रह गया।

प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के बाद भारत में पी. वी. नरसिम्हा राव की सरकार बनी थी। तब पी. वी. नरसिम्हा राव ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए सफल प्रयास किया। पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिलवाने के लिए उन्होंने 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम लाया और यह संविधान संशोधन अधिनियम बहुमत रहने के कारण राज्यसभा और लोकसभा में पारित हो गया। वर्ष 1992 में 22 दिसंबर को यह लोकसभा में पारित हुआ तथा 23 दिसंबर को राज्यसभा से भी पारित हो गया। पारित होने के बाद राष्ट्रपति की मुहर के लिए इसे अगले वर्ष 1993 को भेजा गया। 20 अप्रैल 1993 को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होते ही पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हो गया। 24 अप्रैल 1993 को पूरे देश में इसे लागू किया गया और तभी से प्रत्येक वर्ष 24 अप्रैल को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार पंचायती राज व्यवस्था ने एक लंबी यात्रा तय करते हुए 24 अप्रैल 1993 को अपने लक्ष्य को प्राप्त किया तथा संवैधानिक दर्जा हासिल किया। 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम के द्वारा भाग–9 में अनुच्छेद 243 से अनुच्छेद 243(ओ) तक पंचायती राज व्यवस्था का संवैधानिक प्रावधान किया गया तथा संविधान में 11वीं अनुसूची जोड़ी गई, जिसमें पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत 29 ऐसे विषय शामिल हैं जो ग्रामीण विकास से संबंधित हैं और पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत बनाते हैं। ◆

पदोन्नति

क्रम संख्या	अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नाम	पदनाम	प्रोन्नत पद	दिनांक
01	श्रवण कुमार दयाल	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	02.04.2025
02	निवास कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	02.04.2025
03	योगेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	02.04.2025
04	उमेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	02.04.2025
05	रामेश्वर सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.04.2025
06	जगदीश राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.04.2025
07	सरवन कुमार–2	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	01.06.2025
08	शफक नवाब खान	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	01.07.2025
09	अमन कुमार	लेखापरीक्षक	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	18.08.2025
10	संजय प्रसाद सिंह	डी.ई.ओ.ग्रुप 'B'	लेखापरीक्षक	14.05.2025
11	अंशु कुमार	डी.ई.ओ.ग्रुप 'A'	डी.ई.ओ.ग्रुप 'B'	07.07.2025
12	ओंकार कुमार	एम.टी.एस.	लिपिक	27.08.2025

”मंत्रमुग्ध“ - एमिली ब्रोटे
"Spellbound"-Emily Brontë

✍ **अर्कजा आकृति**
कनिष्ठ अनुवादक

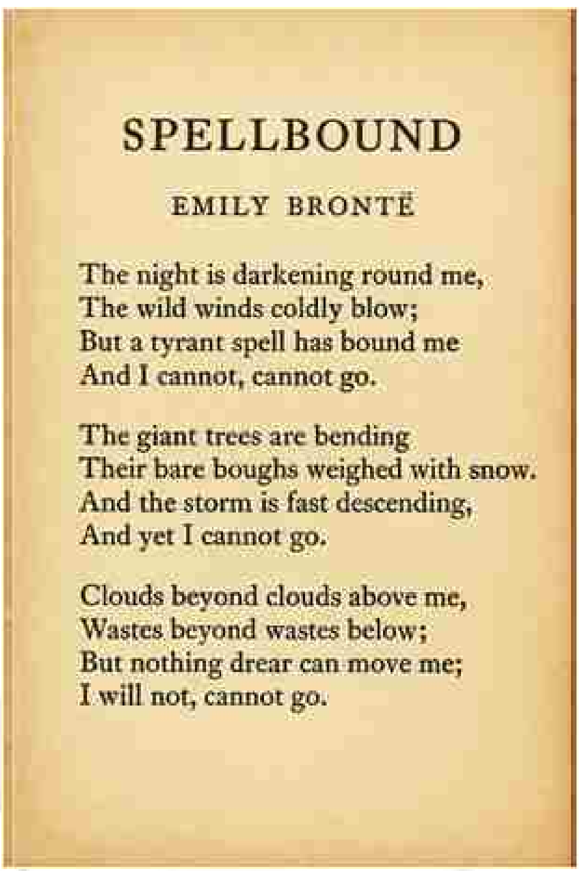

SPELLBOUND

EMILY BRONTË

The night is darkening round me,
The wild winds coldly blow;
But a tyrant spell has bound me
And I cannot, cannot go.

The giant trees are bending
Their bare boughs weighed with snow.
And the storm is fast descending,
And yet I cannot go.

Clouds beyond clouds above me,
Wastes beyond wastes below;
But nothing drear can move me;
I will not, cannot go.

रात्रि ने घेर लिया मुझको,
प्रचंड झोंके शीतल बहे;
एक क्रूर मंत्र ने बाँध लिया है,
पग मेरे आगे न बढ़ सके।
विशाल वृक्ष झुके हिम–भार तले,
सूखी डालियाँ कराह रही हैं ;
तूफान उतर रहा है तीव्र,
पर पग मेरे आगे न बढ़ सके।
मेरे ऊपर मेघ पर मेघ,
नीचे असीम उजाड़ धरा;
पर वीरान दृश्य न हिला सके मन,
मैं अडिग, पग मेरे आगे न बढ़ सके।

अनुशासन

✍ शिव शंकर राय
पर्यवेक्षक, (सेवानिवृत्त)

अनुशासन, जीवन की वह नींव है जिस पर सफलता की संपूर्ण इमारत का निर्माण होता है। यह केवल एक शब्द नहीं, बल्कि ऐसा आचरण है जो व्यक्ति की कार्यशैली, व्यवहार और सोच को दिशा देता है। जीवन का कोई भी क्षेत्र – चाहे वह शिक्षा हो, खेल हो, व्यवसाय हो या सामाजिक जीवन – अनुशासन के बिना संतुलित और सफल नहीं हो सकता।

स्कूली जीवन में अनुशासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक छात्र का समय पर पढ़ाई करना, नियमित रूप से विद्यालय जाना और शिक्षकों का आदर करना आवश्यक है। यह उसकी अनुशासित जीवनशैली का परिचायक है। ऐसे विद्यार्थी न केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं, बल्कि आगे चलकर जीवन में भी सफलता अर्जित करते हैं। दूसरी ओर, अनुशासनहीनता से पढ़ाई में पिछड़ना, लक्ष्य से भटकना और जीवन में असफलता की संभावना बढ़ जाती है।

इसी प्रकार, खेल के क्षेत्र में भी अनुशासन के बल पर ही कोई महान खिलाड़ी बन सकता है। कार्यक्षेत्र में अनुशासन व्यक्ति की पहचान बनाता है। समय का पालन करना, ईमानदारी से कार्य करना और अपने कर्तव्यों को निष्ठा से निभाना एक अनुशासित कर्मचारी की पहचान होती है। ऐसे कर्मचारी संस्थान की प्रगति में योगदान देते हैं और स्वयं भी प्रगति करते हैं। इसके विपरीत, लापरवाही, विलंब और अव्यवस्थित कार्यशैली व्यक्ति को पीछे छोड़ देती है। सामाजिक जीवन में भी अनुशासन अत्यावश्यक है। यातायात नियमों का पालन करना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना और समाज के नियमों का अनुकरण करना प्रत्येक नागरिक की सच्ची जिम्मेदारी होती है। एक अनुशासित समाज ही सशक्त और सुरक्षित होता है।

अनुशासन का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता खो दे, बल्कि इसका आशय है – स्वतंत्रता का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना। यह आत्मनियंत्रण और आत्मबोध का प्रतीक है। यही कारण है कि सफलतम व्यक्ति अनुशासन को अपने जीवन का मूलमंत्र मानते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन एक अनिवार्य तत्व है। यह व्यक्ति को न केवल बाहरी रूप से सुसंगठित बनाता है, बल्कि भीतर से दृढ़, धैर्यवान और लक्ष्य के प्रति समर्पित करता है तथा उसे महान बनाता है। अतः यदि हम जीवन में सच्ची सफलता पाना चाहते हैं, तो अनुशासन को अपनाना ही होगा, क्योंकि अनुशासन के बिना जीवन एक दिशाहीन नौका की भांति होता है, जो कभी किनारे नहीं लगती। ◆

सोनपुर में लागल बा मेला

✍ कुमार शैलेन्द्र चन्द
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सोनपुर में लागल बा मेला,
देखे ला मनवा मोरा करेला।

दुनिया के सबसे बड़ा पशुवन मेला,
सुई से लेके हाथी तक के खरीदारी होला।
गंगा–गंडक के संगम पे लागल मेला,
देखे ला मनवा मोरा करेला।

इहवें बिराजे बाबा हरिहर नाथ,
विष्णु–शंकर के शक्तियो बाटे साथ।
दुनिया में नाहीं अइसन मेला,
देखे ला मनवा मोरा करेला ।

राजा रामचन्द्र अइलें जनकपुर से,
माई सीता के लइलें संग अपने घर से।
गंडक में डुबकी लगवलें,
बाबा हरिहरनाथ के मनवलें।
सोनपुर में लागल बा मेला,
देखे ला मनवा मोरा करेला ।

अंडमान निकोबार द्वीप समूह का यात्रा वृतांत

✍ दीप शिखा गुप्ता
द्वारा– श्री निरज कुमार, लेखापरीक्षक

मैं पटना वीमेंस कॉलेज, पटना से स्नातक (Graduate) हूँ। मैं दो बच्चों की माँ हूँ – कव्या और सृष्टि। घर की नित्य दिनचर्या से थोड़ा ब्रेक लेकर शहर की कोलाहल से दूर जीवन में नए रंग और उत्साह के लिए प्रकृति के सान्निध्य में जाने की इच्छा ने मुझे प्रेरित किया और मैं परिवार सहित अंडमान–निकोबार की यात्रा पर निकल पड़ी।

अंडमान–निकोबार की खूबसूरती मैंने अब तक केवल डिजिटल दुनिया में देखी थी, किंतु वहाँ पहुँचकर मैंने इसकी वास्तविकता से साक्षात्कार किया। अंडमान अपने सुंदर समुद्र तटों, स्वच्छ समुद्री जीवन, सुनहरे रेत और नीली लहरों, रंग–बिरंगी मछलियों,प्रवाल भित्तियों, झूमते नारियल के पेड़ों, घने जंगलों, तट के किनारे सड़कों आदि से एक अलग दुनिया का अहसास कराता है।

हवाई जहाज से यात्रा करते हुए पहले दिन हम सब अंडमान की राजधानी पोर्टब्लेयर (श्रीविजयपुरम) पहुँचे और वहाँ स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को श्रद्धांजलि देने वाले राष्ट्रीय स्मारक –सेल्युलर जेल का भ्रमण किया। वहाँ लाइट एंड साउंड शो के माध्यम से हमारे वीर सपूतों की वेदना और बलिदान को अनुभव कर हम भावुक हो गए।

नॉर्थ बे आइलैंड में ग्लास बोट की यात्रा करते हुए समुद्र के नीचे के दृश्यों तथा रोमांचक गतिविधियों को नजदीक से देखने का अवसर मिला। यहाँ से हम लोग बोट से यात्रा कर स्वराज द्वीप (हैवलॉक) गए और वहाँ एक खूबसूरत रिसॉर्ट में ठहरे। अगले दिन काला पत्थर बीच पर गए। वहाँ समुद्र तट की प्राकृतिक सुंदरता, सुनहरी रेत, नीला पानी, काली चट्टानों और समुद्री लहरों की गुनगुनाहट ने एक मनोहारी अनुभव दिया। वहीं राधानगर बीच पर शाम को बैठकर सुंदर प्राकृतिक लोक का आनंद लेते हुए समुद्र तट पर सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य आत्मा को स्पंदित कर गया। यहाँ हरियाली के मध्य में सूर्यास्त का मनोरम दृश्य हमें अद्भुत आनंद देता है। बच्चों ने यहाँ समुद्र की लहरों से विभिन्न आकृतियाँ बनाकर रेत–चित्रकला का आनंद लिया।

अगले दिन एलीफेंटा बीच गए जहाँ पानी के खेल (Water Sports) जैसे –स्कूबा डाइविंग, जेट स्कीइंग, बोटिंग आदि रोमांचक गतिविधियों का आनंद लिया। यहाँ रंगीन मछलियाँ और कोरल रीफ अत्यंत सुंदर थीं। यहाँ से हम लोग क्रूज शिप से यात्रा करते हुए शहीद द्वीप (नील आइलैंड) पहुँचे। यह अपनी अच्छी कृषि उपज के लिए अंडमान का "सब्जी का कटोरा" कहलाता है। इस द्वीप के मनोहारी दृश्यों का आनंद लेते हुए हम लोग भरतपुर, लक्ष्मणपुर और सीतापुर बीच की यात्रा किए। सीतापुर तट जहाँ सूर्योदय के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद दिलाता है , वहीं लक्ष्मणपुर तट सूर्यास्त का रंगीन नजारा बिखेरता है।

अंडमान में हमने इस पूरी यात्रा में वहाँ के स्थानीय बाजार का आनंद लिया, जहाँ के मीठे नारियल पानी और पारंपरिक भोजन जैसे बंगाली व्यंजन, सी–फूड का स्वाद अत्युत्तम था। स्थानीय लोगों की भाषा, जीवनशैली, संस्कृति को भी जानने का अवसर मिला। लगभग सभी समुद्र तटों पर हरे–भरे नारियल के वृक्ष, लटकते नारियल के गुच्छे, लहरों से रौशन होता विशाल समुद्र, सागर के सीने पर हिचकोले खाती समुद्री फेरियाँ अद्भुत लग रही थीं।

लक्ष्मणपुर से वापस पोर्ट ब्लेयर आकर वहाँ से जारवा द्वीप गये। घने जंगलो से रोड़ ट्रीप करते हुए फेरी के माध्यम से बारातांग द्वीप पहुँचे। यहाँ लाईम स्टोन केभ, मैंग्रोव जंगल, मड वोलकैनो प्रसिद्ध है। साथ ही जारवा ट्राइव रिजर्व से होकर यात्रा के क्रम में जारवा जनजातियों को देखने का अवसर मिला। जारवा जनजाति अंडमान–निकोबार द्वीप समूह की एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है। इनकी सुरक्षा एवं संरक्षण सुनिश्चित किया जाता है ताकि वे अपनी पारंपरिक जीवनशैली को अभेद्य रूप से बनाये रखें। यह पूरी यात्रा अनेक अविस्मरणीय स्मृतियों से भरी थी। अंडमान की दुबारा यात्रा सोचकर ही रोमांच होता है। हर दिन की खूबसूरत यात्राओं और पलों को हमने तस्वीरों में कैद कर लिया और फिर अपनी पुरानी दिनचर्या में लौट आए।

◆

श्रावण मास और कांवर यात्रा

श्रावण अथवा सावन मास विशिष्ट रूप से भगवान शिव की आराधना को समर्पित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, श्रावण मास में ही देव और दानवों द्वारा क्षीरसागर का मंथन हुआ था। मंथन से हलाहल विष निकला था, जो इतना भयावह था कि समस्त सृष्टि का विनाश कर सकता था। तब सृष्टि की रक्षा के लिए भगवान शिव ने उस विष का पान कर लिया, जिसके कारण वे नीलकंठ कहलाए।

✍ **स्वपनिल कुमार**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मान्यता है कि विष की ज्वाला को शांत करने के लिए शिवलिंग पर जल अर्पित करने की परंपरा प्रारंभ हुई। विभिन्न पौराणिक कथाओं के अनुसार, प्रथम काँवरिया के रूप में प्रभु श्रीराम, भगवान परशुराम, रावण तथा श्रवण कुमार का अलग–अलग उल्लेख मिलता है।

श्रावण मास में काँवर यात्रा सहयोग, अनुशासन तथा आत्म–नियंत्रण की पाठशाला है। इसमें स्वच्छता और शुचिता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। काँवर में जल भरने के उपरांत उसे भूमि पर नहीं रखना चाहिए, बल्कि किसी ऊँचे स्थान पर रखना चाहिए।

भारत में काँवर यात्रा विभिन्न स्थानों से होती है, जिनमें सबसे प्रसिद्ध है – बिहार राज्य के सुल्तानगंज से झारखंड राज्य के देवघर तक की यात्रा। इस यात्रा में हर उम्र, जाति, वर्ग और भाषा के लोग प्रभु शिव की भक्ति में एकाकार होकर "बोल बम" का उद्घोष करते हुए सुल्तानगंज की उत्तरवाहिनी गंगा से जल लेते हैं और लगभग 100 किलोमीटर पैदल चलकर देवघर में स्थित बाबा बैद्यनाथ के शिवलिंग पर जल अर्पित करते हैं। पूरे श्रावण मास में यह मार्ग निरंतर चलता रहता है और काँवरियों के केसरिया वस्त्रों से पूरा मार्ग केसरियामय हो उठता है।

काँवर यात्रा मुख्यतः तीन प्रकार की होती है:

1. साधारण काँवरिया –ये जल भरने के पश्चात अपनी शक्ति के अनुसार चलते हुए जाते हैं तथा 2 से 5 दिनों के भीतर जलार्पण कर देते हैं।
2. डाक बम –ये जल भरने के पश्चात बिना रुके दौड़ते/चलते हैं तथा 24 घंटे के भीतर जलार्पण कर देते हैं।
3. दाँडी बम –यह सबसे कठिन रूप है। इसमें काँवरिया दंड–बैठक करते हुए मार्ग पूरा करते हैं, जिसके कारण इसमें काफी समय लगता है।

आजकल बदले हुए परिदृश्य में बहुत से लोग गाड़ी से बाबाधाम जाकर भी जलार्पण करते हैं।

विगत दो वर्षों से मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है कि मैं सुल्तानगंज से गंगाजी का जल काँवर में लेकर बाबाधाम जाकर बाबा बैद्यनाथ को अर्पित करता हूँ। राह में आने वाले थोड़े–बहुत कष्टों के उपरांत प्रभु को जल अर्पित करने के बाद जो सुखद अनुभूति होती है, उसका वर्णन शब्दों में संभव नहीं है।

बस इतना ही लिखा, कहा और सुना जा सकता है:
"बोल बम! हर–हर महादेव!"

सुल्तानगंज → असरगंज → तारापुर → कुमरसर → जलेबिया पहाड़ → सूइया पहाड़ → कटोरिया → इनवरण → गोरियारी नदी → कलकतिया → दर्शनिया → बाबाधाम

भिखारी बनते बच्चे

✍ रजनीश वर्मा
सहायक पर्यवेक्षक

माँ के ममत्व और पिता की छाँव से कोसों दूर, घर पर अकेले रह रहे अपने छोटे बच्चे और बुजुर्ग माता के कारण, प्रत्येक शुक्रवार की भाँति आज भी मुझे बस पकड़कर घर जाना था। कार्यालय बंद होते ही मैं जल्दी से घर जाने को निकला। अभी कुछ ही दूर पहुँचा था कि मैंने देखा, एक पुलिस गाड़ी सड़क के किनारे खड़ी है और कुछ पुलिसकर्मी अपनी गाड़ी से बाहर निकलकर फुटपाथ पर डेरा डाले खानाबदोश लोगों के बच्चों को खाना बाँट रहे हैं।

इसी दौरान, एक महिला की नजर उस पुलिसकर्मी पर पड़ी। उसने बिना समय गँवाए, बिखरे और उलझे बालों तथा फटेहाल कपड़ों को जैसे–तैसे सँभालते हुए, अपने पति की गोद से अबोध बच्चे को उठाया और उसे अपनी गोद में लेकर उस पुलिसकर्मी की ओर भागी। यह देखकर मैं पहले अचंभित हुआ, लेकिन क्षणभर में उसके भाव को समझ गया। वह महिला पलभर में पुलिसकर्मी के पास जाकर खड़ी हो गई और अपने अबोध बच्चे के नाम पर भोजन माँगने लगी।

चूँकि मुझे घर जाने की जल्दी थी, इसलिए मैं अपनी धुन में आगे बढ़ता रहा। फिर भी उत्सुकतावश पीछे मुड़–मुड़कर तब तक देखता रहा, जब तक कि वह मेरे नेत्रों से ओझल नहीं हो गई। यह घटना मेरे मन को पूरी राह विचलित करती रही और मैं उस अबोध बच्चे के बारे में सोचता रहा। वात्सल्य और ममत्व भला किसके हृदय में नहीं होता! प्रत्येक इंसान के भीतर बच्चों के प्रति वात्सल्य होता है, क्योंकि बच्चे वास्तव में भगवान के रूप होते हैं।

मुझे ऐसा लगा कि उस पुलिसकर्मी ने निश्चित ही उस महिला को उसके बच्चे के नाम पर कुछ न कुछ खाने को दे दिया होगा। खैर, जो भी हो, मैं यहाँ सिर्फ समाज में फैली भीख रूपी कुरीति और ऐसे अनेकों अबोध बच्चों के बारे में कहना चाहता हूँ। बच्चे जिस परिवेश में पलते–बढ़ते हैं, वे उसी के अनुरूप ढल जाते हैं। आज जिस अबोध बच्चे को उसकी माँ अपनी गोद में लेकर उसके नाम पर भीख माँग रही है, कल वही बच्चा धीरे–धीरे बड़ा होकर यही समझेगा कि भीख माँगकर पेट भरना ही उसकी जिन्दगी है, क्योंकि बचपन से उसने यही देखा है।

भविष्य में वही बच्चा कभी अपने माता–पिता के साथ तो कभी अकेले, हाथ में कटोरा लिए सड़कों पर भीख माँगते नजर आएगा। भीख की प्रथा समाज के लिए अभिशाप है। यह प्रथा देश और समाज को अवनति की ओर ले जाती है। खानाबदोश जीवन बिताने वाले लोग बाहरी दुनिया और सामान्य सार्वजनिक जीवन से बिल्कुल अलग–थलग रहते हैं। अज्ञानता और अशिक्षा के कारण वे वास्तविक जीवनशैली से कटे रहते हैं और भीख माँगकर पेट पालना ही उनकी जिन्दगी का एकमात्र उद्देश्य बन जाता है।

◆

पार्क की हवा है सेहत की दवा

✍ **भूषण प्रसाद**
सहायक पर्यवेक्षक

आज की तेज रफ्तार जिंदगी, बढ़ते प्रदूषण, शहरीकरण और डिजिटल युग में लंबे समय तक बैठकर काम करने की आदत ने हमारी सेहत को गहराई से प्रभावित किया है। ऐसे समय में यदि कोई निःशुल्क और सरल उपाय हमें मानसिक तथा शारीरिक दोनों स्वास्थ्य के लिए उपलब्ध हो जाए, तो वह किसी वरदान से कम नहीं होगा। शहरों में पार्क ही वह स्थान हैं जहाँ सेहत की सच्ची दवा, अर्थात् शुद्ध हवा, सहज ही प्राप्त की जा सकती है।

पार्क वह स्थान है जहाँ व्यक्ति हरियाली, स्वच्छ वातावरण और शुद्ध हवा पाकर तनाव से राहत अनुभव करता है। सुबह की ताजी हवा में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है, जो शरीर को ऊर्जावान बनाती है। वृक्षों की हरियाली, पक्षियों की चहचहाहट और सूर्य की पहली किरणें मानसिक संतुलन स्थापित करने में सहायक होती हैं।

पार्क में टहलना, दौड़ना, योग अथवा प्राणायाम करना शरीर को चुस्त–दुरुस्त बनाए रखता है। ये गतिविधियाँ मोटापा घटाने, हृदय रोगों को दूर रखने, रक्तसंचार सुधारने और श्वसन तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायक होती हैं। बच्चों के लिए झूले और खेल की जगह उन्हें शारीरिक रूप से सक्रिय रखती है तथा स्क्रीन–समय को कम करती है।

पार्क की शांति, हरी घास पर नंगे पाँव चलना और खुली हवा में गहरी साँस लेना–ये सभी क्रियाएँ तनाव और अवसाद को कम करने में कारगर सिद्ध होती हैं। अनेक शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि जो लोग प्रतिदिन कुछ समय पार्क में व्यतीत करते हैं, वे अधिक प्रसन्नचित्त और सकारात्मक सोच वाले होते हैं।

पार्क में विभिन्न आयु वर्ग के लोग एकत्रित होते हैं–बुजुर्ग, युवा, बच्चे–जिससे सामाजिक संबंधों में प्रगाढ़ता आती है। वृद्धजन अपने साथियों से बातचीत करके अकेलेपन से उबरते हैं, वहीं युवा वर्ग सामूहिक व्यायाम या खेलों में भाग लेकर अधिक मिलनसार बनता है।

शहरों में बढ़ते कंक्रीट के जंगलों के बीच पार्क पर्यावरण को संतुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं और स्थानीय जैव–विविधता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

पार्क केवल मनोरंजन का स्थल नहीं, बल्कि प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र हैं, जो निःशुल्क, प्रभावी और सतत हैं। "पार्क की हवा है सेहत की दवा" मात्र कहावत नहीं, बल्कि एक व्यवहारिक सत्य है। इसे अपनाकर हम शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। अतः हमें न केवल पार्कों की संख्या बढ़ानी चाहिए, बल्कि उनका समुचित उपयोग भी करना चाहिए। ◆

पापा मेरे पापा

✍ **रामौतार प्रसाद**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

बैठा हूँ चुपचाप
सोचा कुछ कहूँ या लिखूँ,
पापा के गुणों पर
कैसे आरंभ करूँ,
कहाँ से शुरू करूँ।

हर क्षण आपका है दिन,
कैसे रह सकता हूँ आपके बिन।
आपने चलना सिखाया,
आपने बोलना सिखाया,
बिन माँगे इच्छाएँ पूरी कराईं।

आप मेरी हँसी में हँसते थे,
मेरी वेदना में रोते थे,
टक–टक देखा करते थे,
पढ़ने के लिए कहा करते थे।
मेरे भविष्य की चिंता करते थे,
बिन कहे सब पूरा करते थे।
मेरी खुशी में भी छुपकर
आप रोते थे,
मेरे दुख में तो बेचैन
सदा हो जाते थे।

माँ तो बोल देती है कुछ न कुछ,
आप बिल्कुल नहीं कहते हैं।
आप तो सच में आप ही हैं,
मेरी तरक्की पर शान करते हैं,
बखान दूजों के सामने करते हैं।
आप सदा दिल में रहते हैं, पापा।
सागर की स्याही कम पड़ जाएगी,
धरा का कागज कम पड़ जाएगा,
आपके कारनामे नहीं लिखे जा पाएँगे।

आप हैं तो जहाँ है, पापा,
आप नहीं तो शून्य है, पापा।
नत मस्तक हूँ मैं, पापा।
जब भी गिरूँ, उठा लेना, पापा,
जैसे पहले उठा लिया करते थे।
आपकी गोद में अपने को पाता हूँ, पापा।

आज वादा करता हूँ, पापा,
विश्वास दिलाता हूँ, पापा,
आपका मान–सम्मान नहीं गिरने दूँगा, पापा।
आप जो कहोगे, मानूँगा और करूँगा, पापा।
ये वादा है मेरा आपसे, पापा।

कोटि–कोटि प्रणाम, पापा।
भूल हो गर, माफी देते रहना, पापा,
जैसे पहले देते थे, पापा।
मेरे पापा, मेरे पापा, मेरे अच्छे पापा।

केरल यात्रा
देवों का अपना देश

✍ **पंकज कुमार सिंह**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

मेरी केरल यात्रा का कार्यक्रम31.08.2024 से प्रारंभ हुआ। सुबह11:30 बजेइंडिगो फ्लाइट से हम पटना से कोच्चि के लिए रवाना हुए। बीच में बेंगलुरु में एक ठहराव था। दोपहर 1:55 बजेहम बेंगलुरु पहुँचे। यहाँ लगभग पाँच घंटे का ठहराव था, लेकिन फ्लाइट दो घंटे लेट हो गई। इस कारण हम रात लगभग साढ़े दस बजे कोच्चि एयरपोर्ट पहुँचे।

एयरपोर्ट पर सामान लेने के बाद बाहर आकर हमने प्रीपेड टैक्सी ली और कोच्चि स्थित सेंट्रल गवर्नमेंट हॉलिडे होम्स के लिए रवाना हुए। टैक्सी का किराया साढ़े ग्यारह सौ रुपये था और एयरपोर्ट से वहाँ पहुँचने में लगभग एक घंटा लग गया। देर रात पहुँचने के कारण हमने हल्का–सा भोजन किया और सो गए। कमरा "आई–सूट" श्रेणी का था, पर व्यवस्था साधारण थी।

फोर्ट कोच्चि यात्रा

अगले दिन सुबह नाश्ता कर हम वाटर मेट्रो स्टेशन गए। फोर्ट कोच्चि जाने के लिए प्रति व्यक्ति 30 रुपये का टिकट था। यह जीवन का पहला अनुभव था वाटर मेट्रो का। लगभग30 मिनट के सफर के बाद हम फोर्ट कोच्चि पहुँचे।

वहाँ हमने बीच किनारे घूमकर फोटो और वीडियो लिए। थोड़ी देर कुर्सियों पर बैठकर विश्राम किया और फिर प्रसिद्ध चर्च देखने गए। पास के ठेले से नारियल पानी और पास की मशहूर दुकान से कॉफी पी। आगे बढ़ते हुए हमने म्यूजियम देखा, फिर पैदल ही नेवल म्यूजियम पहुँचे। वहाँ बंकर, हेलीकॉप्टर, टॉरपीडो और कई प्रकार के हथियार देखे। यह बहुत रोमांचक अनुभव था।

वहाँ से हम ज्यू टाउन पहुँचे, ज्यू टेंपल देखा और मार्केट में घूमे। फिर बस पकड़कर लुलु मॉल गए। शाम का समय था। मॉल अत्यंत विशाल और आकर्षक था। अलग–अलग दुकानों में घूमते हुए हम फूड कोर्ट पहुँचे। वहाँ का मसाला डोसा बहुत कलात्मक ढंग से बना था– एक ही बड़ा डोसा, जिसे छह पीस में काटा गया था। डोसा आने में लगभग आधा घंटा लगा, लेकिन स्वाद इतना लाजवाब था कि दोनों का पेट भर गया। अन्य व्यंजन और कॉफी का आनंद लेने के बाद हम हॉलिडे होम लौटकर विश्राम करने लगे। अगले दिन सुबह हमें अथिरापल्ली जाना था, इसलिए जल्दी सो गए।

अथिरापल्ली वाटरफॉल

सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर हम एर्नाकुलम रेलवे स्टेशन पहुँचे। हमें चालाकुडी रेलवे स्टेशन जाना था। डेढ़ घंटे की यात्रा के लिए टिकट पहले से आरक्षित थे। चालाकुडी से हमने बस पकड़ी और लगभग एक घंटे में अथिरापल्ली पहुँचे।

अथिरापल्ली वाटरफॉल का टिकट लेकर हम अंदर गए। रास्ता थोड़ा कठिन था। वहाँ दो व्यू–पॉइंट थे – एक से पास जाकर गिरते झरने को देख सकते थे जिसका मार्ग थोडा कठिन था और दूसरे से लगभग एक किलोमीटर दूर जाने पर ऊँचाई से गिरते झरने का नजारा लिया जा सकता था। यह दृश्य अत्यंत मनोहारी और रोमांचक था।

पास ही वाझाचल वाटरफॉल भी देखा, जो घने जंगल के बीच स्थित था। वहाँ से लौटकर हम चालाकुडी आए और ट्रेन पकड़कर एर्नाकुलम पहुँचे। ऑटो से हॉलिडे होम लौट गए।

कालीकट यात्रा

03.09.2024को जनशताब्दी ट्रेन से एर्नाकुलम से कालीकट पहुँचे। लगभग 6 घंटे की यात्रा थी। कालीकट को कोझिकोड भी कहते हैं। यहाँ भी सेंट्रल गवर्नमेंट का हॉलिडे होम था, जहाँ हमने चार दिन के लिए कमरा बुक कराया था।

शाम को हम ऑटो से कालीकट बीच पहुँचे। दृश्य बड़ा मनोहर था, बहुत भीड़ थी। वहाँ बर्फ के स्लाइस में तरह–तरह की चीजें डालकर लोग बेच रहे थे। बहुत स्वादिष्ट लगा, हमने दोबारा भी लिया। बीच पर घूमने के बाद लौटते समय मशहूर एस.एम. स्ट्रीट मार्केट गए। ओणम पर्व निकट होने के कारण बाजार में बहुत भीड़ थी। हॉलिडे होम्स में रात के खाने की व्यवस्था नहीं थी, इसलिए हम बाहर खाकर लौटे।

बायपोर बीच और बर्ड सैंक्चुरी

04.09.2024 को सुबह 9 बजे कैंटीन में इडली और कॉफी ली। यहाँ की कैंटीन सुबह 9 बजेसे शाम 5बजे तक ही खुली रहती थी क्योंकि आसपास कई केंद्रीय कार्यालय थे। कालीकट हॉलिडे होम्स में ऑनलाइन बुकिंग के लिए केवल एक ही कमरा था, सौभाग्य से हमें मिल गया। यहाँ हमने चार दिनों के लिए रूम बुक किया था ।

नाश्ते के बाद हम बस से बायपोर बीच गए। वहाँ से बीच तक पहुँचने के लिए ऑटो लिया। बीच बहुत सुंदर था। लगभग एक किलोमीटर लंबा पैदल मार्ग (पैसेज) बना हुआ था। लौटते समय पता चला कि पास में कडलुंडी बर्ड सैंक्चुरी है। हम वहाँ भी घूमने चले गए। ◆

मानव जीवन से जंगलों, पहाड़ों और नदियों का रिश्ता

✍ आदित्य शरण कौशलेश
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मानव जीवन प्रकृति से गहराई से जुड़ा हुआ है। जंगल, पहाड़ और नदियाँ न केवल हमारे अस्तित्व का आधार हैं, बल्कि जीवन को संतुलित और सुंदर भी बनाते हैं। प्राचीन काल से मनुष्य का जीवन प्राकृतिक परिवेश पर निर्भर रहा है। जब हम जंगलों, पहाड़ियों और नदियों के बारे में सोचते हैं, तो हमें जीवनदायिनी शक्ति, शांति और स्थायित्व की अनुभूति होती है।

जंगलों को धरती के ''फेफड़े'' के समान कहा जाता है। ये हमें शुद्ध हवा, जलवायु का संतुलन और अनगिनत पौधे व जीव–जंतु प्रदान करते हैं। मनुष्य के भोजन, औषधियों और लकड़ी आदि का बड़ा हिस्सा जंगलों से ही आता है। यदि जंगल न हों तो न सिर्फ हमारा अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा, बल्कि धरती पर जीवन की विविधता भी समाप्त हो जाएगी। मनुष्य का जंगलों से रिश्ता केवल भौतिक जरूरतों तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक शांति और सौंदर्य का अनुभव भी इन्हीं से मिलता है।

इसी प्रकार, पहाड़ मानव जीवन में स्थिरता और धैर्य का प्रतीक हैं। वे प्राकृतिक जलस्रोतों का आधार हैं। हिमालय जैसी विशाल पर्वत श्रृंखलाएँ न केवल प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र हैं, बल्कि कई नदियों का उद्गम स्थल भी हैं। पहाड़ मौसम को नियंत्रित करते हैं, वर्षा को प्रभावित करते हैं और खनिज एवं औषधीय पौधों का भंडार भी हैं। पहाड़ धरती का संतुलन बनाए रखते हैं और अनेक वर्षों से मानव सभ्यता का मार्गदर्शन करते रहे हैं। सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी पहाड़ों को पवित्र माना जाता है। जीवन में आने वाली कठिनाइयों से लड़ने में उनसे संघर्ष और ऊर्जावान बने रहने की प्रेरणा मिलती है।

नदियाँ तो जीवन की धारा हैं। वे हमें पीने का जल, खेती का आधार और जीवन–यापन का साधन प्रदान करती हैं। प्राचीन सभ्यताएँ गंगा, नील और सिंधु जैसी महान नदियों के तट पर ही फली–फूलीं। गंगा और यमुना नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं हैं, बल्कि संस्कृति, साहित्य और आस्था का भी आधार हैं। जीवन की निरंतरता और प्रवाहशीलता को नदियाँ खूबसूरती से दर्शाती हैं। नदियों के संगम पर लगने वाला कुंभ मेला भारत की सांस्कृतिक विविधता का परिचायक है।

इस प्रकार, जंगल, पहाड़ और नदियाँ मनुष्य के जीवन के अभिन्न अंग हैं। इनसे हमारा रिश्ता केवल उपयोग और भौतिक लाभ तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें इनके संरक्षण और सम्मान का भाव भी रखना चाहिए। यदि हम प्रकृति के इन उपहारों को सहेजकर रखेंगे, तो न सिर्फ वर्तमान बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ भी जीवन की सुंदरता और संतुलन का अनुभव कर सकेंगी।

अंत में कहा जा सकता है कि मानव जीवन और प्रकृति का रिश्ता आत्मा और शरीर जैसा है। जंगल, पहाड़ और नदियाँ हमारी जन्मदात्री, पालनहार और जीवनरक्षक हैं। इनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, तभी हमारा जीवन भी सुरक्षित और आनंदमय रहेगा।

◆

बादलों की सवारी-तवांग की ओर एक सफर

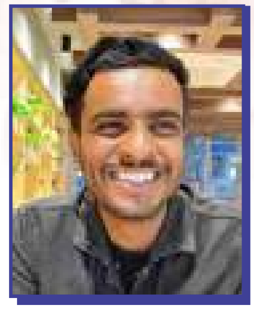

✍ गौरव कुमार महतो
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दुर्गा पूजा नजदीक थी– पटना पहले से ही पंडालों, रोशनी, ढोल की गूंज और भोग की खुशबू से महक रहा था। मैं मानसिक रूप से तैयार था, हर साल की तरह– परिवार के साथ वक्त बिताना, तेज संगीत, खाने की खोज और हर मशहूर पंडाल में लंबी–लंबी कतारें।

तभी कुछ ऐसा हुआ, जिसकी उम्मीद नहीं थी।

एक शाम, एक पुराने दोस्त का फोन आया।

''भाई, इस पूजा में बाइक ट्रिप प्लान कर रहे हैं तवांग– मैं, विद्युत, अजय और सौरभ। तू चलेगा?''

मैं हँस पड़ा, थोड़ा असहज होकर। तवांग? बाइक से? वह भी दुर्गा पूजा में? दिल जोर–जोर से धड़कने लगा। मन का एक हिस्सा चिल्लाया, ''चलो यार!'' लेकिन दूसरा डर रहा था, फुसफुसाते हुए कह रहा था, ''घर वाले क्या कहेंगे? पूजा छोड़कर जाना ठीक रहेगा?''

मैंने क्लासिक जवाब दिया: ''देखते हैं।''

कुछ ही मिनटों में 'तवांग राइडर्स' नाम का व्हाट्सएप ग्रुप बन गया। असली खेल वहीं से शुरू हुआ।

हर घंटे कोई न कोई कुछ न कुछ भेज रहा था–रूट मैप्स, रहने की जगहें, सेला पास के सीनिक व्यूज, इनर लाइन परमिट की जानकारी और खाने की सिफारिशें। उत्साह ऐसा था कि मैं रात को लेटकर ग्रुप चौट स्क्रॉल करता रहता, दिल में रोमांच की गुदगुदी के साथ। धीरे–धीरे जिज्ञासा ने चाहत का रूप ले लिया।

आखिरकार मैंने हाँ कर दी।

पहले खुद को मनाया, फिर घरवालों को। थोड़ी हैरानी, थोड़ी चिंता के बाद उन्होंने इजाजत दे दी। एक दोस्त ने इनर लाइन परमिट का सारा झंझट संभाल लिया, और हम पागल कॉलेज के लड़कों की तरह पैकिंग में लग गए –हँसी–मजाक, जरूरत से ज्यादा सामान और प्लानिंग से ज्यादासपने।

यात्रा की शुरुआत

हमने दशमी की सुबह अपने मिशन की शुरुआत की–पटना से तवांग तक, लगभग 2500 किलोमीटरका रोमांच। हमारा रूट था: पटना → भागलपुर → न्यू जलपाईगुड़ी → गुवाहाटी → दिरांग → तवांग।

सड़कें हमारा खेल का मैदान थीं, और आसमान हमारी छत। इंजन की आवाजें हँसी, चाय के स्टॉल, ढाबे के गाने और धूल से सने गालों के साथ घुल–मिल गईं।

न्यू जलपाईगुड़ी में रात बिताई–एक सस्ते लॉज में, ठंडा मौसम, गर्म जोक्स और अंतहीन बातें। अगले दिन अलीपुरद्वार होते हुए बोंगाईगाँव, फिर गुवाहाटी पहुँचे।

रास्ते में संस्कृति से मुलाकात

आप सोच सकते हैं बाइक चलाना सिर्फ थ्रॉटल और किलोमीटर की बात है। लेकिन नहीं।

हर स्टॉप पर हम जिंदगियों से मिले। अलग बोलियाँ, अलग खाने, अलग मुस्कानें। बोंगाईगाँव में एक मोमोज बेचने वाली महिला ने एक्स्ट्रा चटनी दी ''एनर्जी के लिए।'' पूर्णिया में एक पेट्रोल पंप वाले ने बाइक देखकर कहा, ''किस्मत वाले हो भाई, जिंदगी देख रहे हो।'' उनकी आँखें वो कह गईं, जो शब्द नहीं कह सकते।

कभी–कभी हम भूल जाते हैं–दुनिया बहुत बड़ी है, लेकिन बहुत ही दयालु भी।

हिमालय की गोद में

गुवाहाटी से हम उदालगुड़ी गए, फिर बॉमडिला पास के घुमावदार रास्तों से होते हुए देर शाम दिरांग पहुँचे। हमने उसी दिन तवांग पहुँचने का प्लान किया था, लेकिन ऊँचाई और थकान ने कुछ और तय कर लिया।

मैं पटना से टी–शर्ट में चला था। सिलीगुड़ी में विंडचीटर लग गई। उदालगुड़ी में जैकेट जरूरी हो गई। और दिरांग में मैं पूरी तरह थर्मल पहनकर भी काँप रहा था–तापमान

5°C से नीचे।

दिरांग के रूम में गीजर नहीं था। पानी ऐसा लग रहा था जैसे सीधे ग्लेशियर से निकला हो। उस रात कोई नहीं नहाया।

लेकिन अगली सुबह, 5:30 बजे, मैंने खुद को ठंडे पानी से नहाने के लिए मजबूर किया। क्योंकि तवांग में, 2°C पर, शायद वो भी नसीब न हो। उँगलियाँ जम गईं, दाँत बजने लगे। लेकिन अंदर से... मैं पहले से कहीं ज्यादा जिंदा महसूस कर रहा था।

तवांग की आखिरी चढ़ाई

अगला हिस्सा तो सपना था—सेला पास, याक के झुंड, हवा में लहराते प्रार्थना के झंडे और तेज हवाओं में गूंजते हिमालय के किस्से।लेकिन तवांग पहुँचना अंत नहीं था। वो तो एक शिखर था—दोस्ती की मजबूती, ''हाँ'' कहने की हिम्मत और ये एहसास कि असली जिंदगी कम्फर्ट जोन से बाहर इंतजार कर रही है।

बादलों में — तवांग की झलक

दिरांग से तवांग की दूरी लगभग 130 किलोमीटरथी—लेकिन सफर ऐसा कि हर सेकंड दिल की धड़कनों में मापा गया।

सेला पास के पास हमें दो रास्ते मिले।एक था नया बना हुआ सेला टनल—आधुनिक, सुरक्षित, तेज। लेकिन हमने चुना पुराना रास्ता।

और बस, वही फर्क था।

सिर्फ 5–6फुट चौड़ा रास्ता, एक ओर खाई, दूसरी ओर खुला आसमान। एक छोटी सी गलती, और आप बादलों में समा सकते थे—सचमुच। रास्ता ऐसा जैसे कोई हिमालयी नागिन। हमारी बाइक की आवाज से ज़्यादा तेज थी सिर्फ हवा की चीख।

मैंने आठ लेयर पहन रखी थीं, फिर भी हवा ऐसे काट रही थी जैसे कागज। उँगलियाँ दस्तानों के अंदर भी जमी हुईं। लेकिन हम रुके नहीं—काँपते हुए, डरे हुए, लेकिन रोमांच से भरे हुए।

और फिर, सामने था—सेला पास।

13,700 फीट की ऊँचाई, बर्फ के टुकड़े, प्रार्थना झंडों की कतार। ऐसा लगा जैसे स्वर्ग वहीं रुक गया हो। वो पल शब्दों से परे था—एक ऐसा एहसास जिसे महसूस किया जा सकता है, लेकिन बयान नहीं।

थोड़ी देर वहाँ रुके, फिर तवांग दूर नहीं था।

तवांगः एक सपना साकार

तवांग ने हमें हवा की ठंडक और लोगों की गर्मजोशी से स्वागत किया। रंग—बिरंगे घर बर्फ से ढके पहाड़ों में बसे थे, और तवांग मोनेस्ट्री एक शांति और इतिहास का प्रहरी बनकर खड़ा था।

लेकिन तवांग सिर्फ एक जगह नहीं है। ये एक तीर्थ है—राइडर्स के लिए।

अगले दिन हम बुमला पास गए—सीधे भारत—चीन बॉर्डर तक। चीनी पोस्ट को अपने देश की सीमा से देखते हुए एक अजीब सी श्रद्धा हुई—सेना के लिए, उस कठिन इलाके के लिए और देश की एकता के लिए।

हमने ये भी देखाः

जसवंतगढ़ वॉर मेमोरियल — जहाँ जसवंत सिंह रावत की वीरता आज भी जिंदा है।

सांगेतसर त्सो (माधुरी लेक) — बर्फ में जमी लहरें और सूखे पेड़, भुतहा लेकिन सुंदर।

नूरानंग वॉटरफॉल — तेज, जंगली और भव्य।

हर जगह हमने सैकड़ों तस्वीरें खींचीं, लेकिन यादें? वो दिल में रह गईं। थुप्का के साथ खाया गया अचार, ठंडी हवाओं में हँसी, बर्फीली वादियों में टूटती धूप—सब कुछ एक सपना लग रहा था।

वापसी और एहसास

वापस लौटते समय कुछ अलग लग रहा था। अब हम सिर्फ बाइकर्स नहीं थे—हम कहानीकार बन चुके थे।

रास्ते में कोकराझार, असम से आए कुछ अन्य राइडर्स मिले—पहले अजनबी, लेकिन बाद में भाई। चाय, रास्तों और किस्सों पर दोस्ती हो गई। आज भी व्हाट्सएप, सोशल मीडिया और यादों में वो रिश्ता जिंदा है।

जैसे—जैसे हम मैदानों में लौटे और एक—एक कर कपड़े उतारते गए, लगा जैसे सिर्फ ठंडी लेयर नहीं, डर, शंका और सीमाएँ भी उतर रही हैं।

सिर्फ एक सवारी नहीं

हाँ, लोग कहते हैं, ''तवांग बहुत सुंदर है।''

लेकिन जब तक आप वहाँ बाइक से न जाएँ, ऊँचाई में साँस न लें, ठंडी हवाओं में काँपते हुए दोस्तों के साथ हँसी न बाँटें, आप असली मायने में उसे महसूस नहीं कर सकते।

मैं घर सिर्फ यादों के साथ नहीं लौटा—मैं लौटा एक नए संकल्प के साथ—कि अब जिंदगी को यूँ ही न गुजारूँ, ज़्यादा बार ''हाँ'' कहूँ और अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर नए क्षितिज तलाशूँ।

इस साल हम फिर एक ट्रिप प्लान कर रहे हैं—कहीं और, कुछ नया। शायद वो कहानी भी आप तक पहुँचे कभी।

क्योंकि हर राइडर जानता है—

मंजिल सिर्फ बहाना है। असली बात तो वो सवारी है जो तुम्हें बदल देती है।

पढ़ने के लिए धन्यवाद। सुरक्षित चलें, आजादी से चलें।

◆

पुनर्मिलन

✍ **अमित कुमार**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

यह बात वर्ष 2009 की है। उन दिनों मैं पटना में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। मेरे एक ग्रामीण मित्र, जो मेरे सहपाठी भी हैं, के बड़े भाई की शादी अप्रैल 2009 में बड़े धूमधाम से हुई थी। मुझे भी उस शादी में आने का निमंत्रण मिला था, लेकिन उसी दिन मुझे एक प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होना था, जिसके कारण मैं उस शादी में शामिल न हो सका।

उसी वर्ष छठ पर्व के अवसर पर मेरे सहपाठी के बड़े भाई, जिनकी हाल ही में शादी हुई थी, गाँव आए थे। गाँव से ड्यूटी पर लौटते समय एक अप्रिय समाचार मिलाकृवे अचानक गुम हो गए थे। उनके लापता होने की सूचना मिलते ही परिवार वाले बहुत चिंतित और भयभीत हो गए। इस घटना की जानकारी मिलते ही मेरा सहपाठी अपने पिताजी के साथ अपने बड़े भाई की तलाश में दिल्ली के लिए रवाना हुआ। उन्होंने काफी खोजबीन की, यहाँ तक कि श्मशान घाटों तक जाकर तलाश की, लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली। अंततः थक–हारकर दोनों गाँव लौट आए।

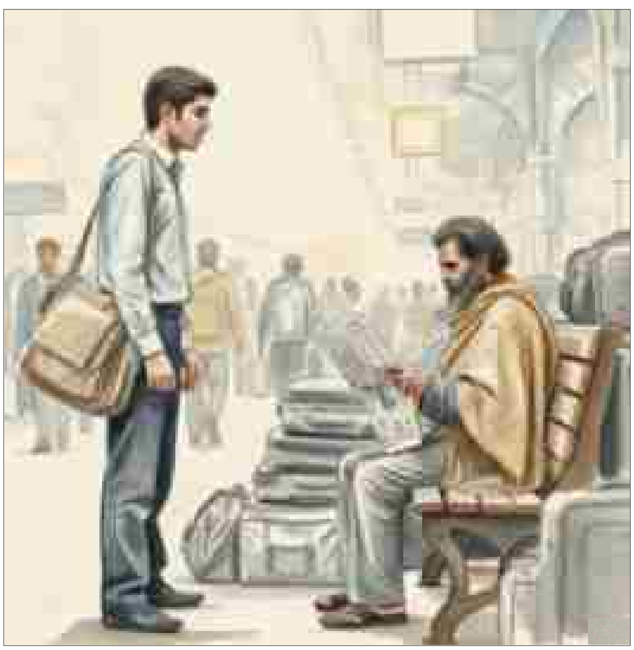

इस घटना की जानकारी मुझे भी मिली। मुझे बहुत अफसोस हुआ, क्योंकि अपने बचपन के दिनों में मैं उनके साथ लंबे समय तक क्रिकेट खेल चुका था। जैसा कि मैंने बताया, मैं उन दिनों प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था। मुझे 29 नवंबर 2009 को राजस्थान ग्रामीण बैंक में लिपिक पद की लिखित परीक्षा के लिए भरतपुर जाना था। मेरी योजना थी—राजेंद्र नगर स्टेशन से दिल्ली जाने वाली जनसाधारण एक्सप्रेस पकड़कर टूंडला जंक्शन पर उतरना, और वहाँ से भरतपुर के लिए दूसरी ट्रेन लेना।

पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। जब मैं राजेंद्र नगर जाने के लिए बहादुरपुर गुमटी से गुजर रहा था, तो रास्ते में विद्यार्थियों का एक समूह दिखाई दिया। मैं भी उनके साथ चल दिया। देखा कि वे सभी राजेंद्र नगर स्टेशन न जाकर राजेंद्र नगर यार्ड में खड़ी संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस की जनरल बोगी में जा बैठे। मुझे भी बैठने की जगह मिल गई। लेकिन इस ट्रेन का ठहराव टूंडला जंक्शन पर नहीं था। इसलिए मैंने योजना में थोड़ा बदलाव किया और तय किया कि मैं नई दिल्ली स्टेशन से भरतपुर के लिए ट्रेन लूँगा।

नई दिल्ली स्टेशन पर उतरकर मैं पूछताछ काउंटर पर गया और भरतपुर जाने वाली ट्रेन की जानकारी ली। ट्रेन के खुलने में काफी समय था, इसलिए मैं बैठने की जगह ढूँढ़ने लगा। तभी मेरी नजर यात्रियों के बैठने के लिए लगी एक कुर्सी पर पड़ी। वहाँ बैठे एक व्यक्ति को देखकर मैं अचंभित रह गया—वह कोई और नहीं, बल्कि मेरे सहपाठी के वही बड़े भाई थे जो कई महीनों से लापता थे!

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। पर मैंने देखा कि वे मैले कपड़े पहने हुए थे, बड़ी–बड़ी दाढ़ी थी और एक चादर ओढ़े हुए थे। मैं उनके सामने जाकर खड़ा हो गया। उन्होंने मेरी ओर देखा, फिर नजरें झुकाकर अखबार पढ़ने लगे। उनका यह व्यवहार उनके स्वभाव के विपरीत था। मेरे मन में खुशी के साथ कई सवाल भी उठे—वे अपने घर क्यों नहीं जा रहे हैं? क्या वे परिवार और संसार से विरक्त हो गए हैं?

मैंने तुरंत अपनी माँ को फोन किया और पूरा घटनाक्रम बताया। माँ ने कहा, "क्या तुम निश्चित हो कि वही व्यक्ति हैं? कहीं किसी मुसीबत में न फँस जाना, सावधान रहना।"मैंने निश्चय किया कि उनसे बात करूँगा।

वापस वहीं गया, लेकिन वे वहाँ से जा चुके थे। मुझे विश्वास हो गया कि वे अपने पारिवारिक जीवन से विमुख हो गए हैं।

मुझे यह जानकर सुकून था कि वे जीवित हैं, लेकिन दुःख था कि उनसे बात नहीं कर सका। तभी मेरी भरतपुर जाने वाली ट्रेन का समय हो गया। मैं ट्रेन में बैठ गया, लेकिन मन उसी घटना में उलझा रहा। मैं सोचता रहा—काश, मैंने उनसे तुरंत बात की होती! इन्हीं विचारों में डूबा मैं सो गया।

अगले दिन परीक्षा से पहले हमेशा की तरह स्नान—पूजन कर परीक्षा दी। परीक्षा समाप्त होने पर मैंने माँ को फोन किया। उन्होंने जो बात कही, वह मैं आजीवन नहीं भूल सकताकृमेरे सहपाठी के बड़े भाई मिल गए थे! यह सुनकर मेरा मन प्रफुल्लित हो उठा। मैंने भगवान को धन्यवाद दिया, जिन्होंने मुझे ग्लानि और पछतावे से मुक्त किया।

पटना लौटने पर मुझे पूरी घटना का पता चला। जब मेरे सहपाठी के बड़े भाई अपनी चाची को जयपुर छोड़कर दिल्ली लौट रहे थे, तब रास्ते में नशाखुरानी गिरोह के सदस्यों ने उन्हें नशा मिला हुआ तंबाकू खिला दिया। फिर उन्हें एक अंधेरी जगह ले जाकर तरह—तरह की यातनाएँ दीं और अपराधों में शामिल होने के लिए दबाव डाला। लेकिन उनके माता—पिता द्वारा दिए गए संस्कारों और नैतिक मूल्यों ने उन्हें झुकने नहीं दिया। अंततः अपराधी उन्हें नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर छोड़कर भाग गए।

उन पर मानसिक आघात इतना गहरा था कि उनकी स्मृति चली गई थी। इसी कारण उन्होंने मुझे स्टेशन पर देखा, पर पहचान नहीं पाए। मेरे पिता द्वारा उनके परिवार को सूचना देने के बाद, दिल्ली में रह रहे उनके रिश्तेदार स्टेशन पहुँचे और खोजबीन शुरू की। अंततः वे मिल गए और उनका मानसिक उपचार हुआ। धीरे—धीरे उनकी स्मृति लौट आई।

इस घटना के बाद मुझे गाँव में और उस परिवार की ओर से बहुत सम्मान मिला, जो आज तक बरकरार है। पर मैं इसे अपना श्रेय नहीं मानता। इसका वास्तविक श्रेय उन माता—पिता को जाता है, जिनके पुण्य—प्रताप और संस्कारों ने उनके बेटे को नया जीवन दिया। मेरे सहपाठी के बड़े भाई की पत्नी भी आज की सती—सावित्री हैं, जिनके विश्वास और धैर्य ने उनके पति को फिर से जीवनदान दिया। आज उनके दो बच्चे हैं और वे सुखी जीवन जी रहे हैं।यह केवल दो व्यक्तियों का पुनर्मिलन नहीं था, बल्कि उन उच्च संस्कारों और अटूट विश्वासों का विजय—उत्सव था, जिसने इस परिवार को फिर से एक कर दिया।

आजकल छोटे शहरों से लेकर बड़े महानगरों तक नशाखुरानी गिरोह सक्रिय हैं। वे तरह—तरह के हथकंडे अपनाकर लोगों, विशेषकर युवाओं और महिलाओं को निशाना बनाते हैं। ये गिरोह बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, पार्कों और सिनेमाघरों के आसपास सक्रिय रहते हैं। नशा खिलाकर लोगों को अपराधों में धकेल देते हैं, जिससे उनका जीवन नरक बन जाता है। हर किसी का भाग्य मेरे सहपाठी के भाई जैसा नहीं होता। इसलिए आप सभी पाठकों से मेरा अनुरोध है कि सतर्क रहें और अपने परिवारजनों को भी सावधान रहने की सलाह दें। ◆

किसी धर्म से ना जोड़ो इस
देश की भाषा हिन्दी को,
इसे एक दिन की नहीं
आपके दिल कि जरूरत है

नाई की चतुराई

✍ **प्रशांत प्रखर**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर मुख्यालय)

बात कई वर्षों पहले की है यूँ कहिये कि आजादी के तुरंत बाद के वर्षों की। अपने राज्य के किसी गाँव में पंडित रामफल रहा करते थे। पंडित जी बड़े विद्वान् थे। उनका एक लड़का था इन्द्रकांत। पंडित जी चाहते थे कि वो भी एक बड़ा पंडित बने। इतना बड़ा कि आस पड़ोस के गाँव में उनका नाम रोशन हो सके। भगवान् की कृपा से किसी चीज की कोई कमी न थी सो पंडिताईन से विचार विमर्श कर के उसे काशी (बनारस) भेजने का निर्णय हुआ। पंडिताईन ने ये भी राय दी कि इन्द्रकांत के साथ जीबछ हजाम का बेटा बंठा भी जाएगा। उन दिनों भी पत्नी की बात काटने की हिम्मत पतियों में न थी सो पंडित जी ने सहमति दे दी।

इन्द्रकांत और बंठा हमउम्र ही थे और उनमे बनती भी थे सो दोनों खुशी खुशी चल दिए भोले बाबा की नगरी 'काशी'। वहां जाकर इन्द्रकांत मध्यमा (मैट्रिक) से लेकर आचार्य (मास्टर डिग्री) तक पढ गए। अब इन्हें अपने गाँव जाना था। उन दिनों आज की तरह मोटर गाड़ियां न थी बल्कि आने जाने के लिए बैलगाड़ी प्रयोग होती थी। पंडित इन्द्रकांत के पास एक बैलगाड़ी से अधिक किताबें थी। अपनी किताबों के साथ पंडित जी एक बैलगाड़ी से और बची खुची किताबों के साथ बंठा हजाम भी चल पड़ा। कई दिनों का रास्ता था। रास्ते में बंठा की तबियत खराब हो गई। वो आगे जाने लायक अभी नहीं था सो उसे नजदीकी गाँव में बैद्य जी के संरक्षण में छोड़कर पंडित जी आगे बढ़ गए। एक दिन का रास्ता पार करने पर अगले दिन कुछ आदमियों ने उनकी बैलगाड़ी का रास्ता रोक लिया। पूछने पर बताया कि हमारे गाँव में भी एक काफी विद्वान् व्यक्ति हैं। उनसे यदि आप शास्त्रार्थ में जीत जाओगे तभी आगे जा पाओगे।पंडित जी ने चुनौती खुशी खुशी स्वीकार कर ली। उन्हें अपने शास्त्रों के ज्ञान पर पूरा भरोसा था। उस तथाकथित विद्वान व्यक्ति का नाम रामचरण पंडित था। उसके पास कई आलमारी किताबें और बहुत सारे गुलाम पंडित थे जो शास्त्रार्थ में उससे हार चुके थे।

रामचरण पंडित के पास जाने पर उसने कहा यदि हम दोनों में से किसी ने दुसरे के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो वो हार जाएगा और इस हार के बाद हारे हुए आदमी की सारी पुस्तकें जीतने वाले की हो जाएगी साथ ही हारने वाला हमेशा के लिए जीतने वाले का गुलाम बन जाएगा। पंडित जी ने ये शर्त भी स्वीकार कर ली। अब प्रश्न पूछने की बारी आई तो शिष्टाचार वश पंडित जी ने उस आदमी से पहले प्रश्न करने को कहा जिसे उसने लपक लिया (ऐसा हमेशा ही होता था हर प्रतिद्वंदी से पहले किसी न किसी तरह रामचरण ही प्रश्न पूछता था)। उसका प्रश्न कुछ यूँ था–
कट कट कुइयां कट कट कुइयां कट कट कुइयां कुईं,
फा फा फुइयाँ फा फा फुइयाँ फा फा फुइयाँ फुइं,
खदबद खुईयां खदबद खुईयां खदबद खुईयां खुई,
सटपट सुइयां सटपट सुइयां सटपट सुइयां सुईं।
इस मुहावरे का अर्थ बताइए'।

पंडित जी ने अपने शास्त्रों में जहाँ कहीं भी इस तरह की चीज हो सकती थी सभी जगह देख ली लेकिन उन्हें यह कहीं नहीं मिला। अंत में उन्हें हार माननी पड़ी। अब वे अपनी किताबें और अपनी आजादी दोनों हार चुके थे। उधर कुछ दिनों बाद बंठा स्वस्थ होकर आते हुए उसी रास्ते से गुजरा। उसके बैलगाड़ी में भी किताबें देखकर उसे भी वैसे ही रोक लिया गया और बातों ही बातों में उसे पता भी चल गया कि पंडित जी यहाँ गुलाम बनाए जा चुके हैं। उसने पंडित जी को छुड़ाने की ठान ली। उसके साथ भी वैसा ही हुआ।लेकिन अबकी बार माजरा अलग था। फिर से वैसा ही कुछ हुआ और रामचरण ने अपना वही एक प्रश्न बंठा से भी दाग दिया–
कट कट कुइयां कट कट कुइयां कट कट कुइयां कुईं,
फा फा फुइयाँ फा फा फुइयाँ फा फा फुइयाँ फुइं,
खदबद खुईयां खदबद खुईयां खदबद खुईयां खुई,
सटपट सुइयां सटपट सुइयां सटपट सुइयां सुईं।
बंठा ने थोडा दिमाग लगाया और उसने बताया– धान की फसल जब तैयार होती है तो उसे काटा जाता है यानी
कट कट कुइयां कट कट कुइयां कट कट कुइयां कुईं,
उसके बाद सूप या कोनिया से हवा कर के दाना और भूसी अलग कर लिया जाता है यानी
फा फा फुइयाँ फा फा फुइयाँ फा फा फुइयाँ फुइं,
अब जब चावल तैयार होता है तो चावल को उबाला जाता है यानी
खदबद खुईयां खदबद खुईयां खदबद खुईयां खुई,
इसके बाद अंतिम प्रक्रिया के रूप में चावल को खा लिया जाता है यानी
सटपट सुइयां सटपट सुइयां सटपट सुइयां सुईं।
इतना सुनने के बाद पंडित रामचरण के पास हथियार डालने के सिवा कोई चारा न था क्योंकि उसे इससे अधिक कुछ भी

आता जाता नहीं था। फिर बंठा ने बोला कि आज से तुम मेरे गुलाम हुए लेकिन मैं तुम्हे गुलाम नहीं बनाऊंगा तुम्हारी सजा यही है कि तुमने अभी तक जितने विद्वान् लोगों को गुलाम बनाया है सबको मुक्त करो और सबसे माफी मांगो। साथ ही कसम खाओ कि आगे से ऐसा कोई भी गलत काम नहीं करोगे। रामचरण ने माफी मांगते हुए पंडित इन्द्रकांत सहित सभी को ससम्मान विदा कर दिया। इन्द्रकांत जी बड़े खुश हुए फिर अपनी बैलगाड़ी लेकर अपने गाँव की ओर चल पड़े।

अभी दो तीन दिनों का रास्ता शेष था। पंडित जी ने पुरे मन से पढाई की थी उन्हें अपने पिता का सपना जो पूरा करना था। अगले पड़ाव पर वो एक गाँव में रुके। सुबह की दैनिक क्रिया से निवृत होकर कुँए पर नहाने चल दिए। कुँए पर काठ (लकड़ी) की चकरी लगी थी और काठ की ही जाफरी से कुँए को ढका गया था ताकि कोई उसमें डूबे न। चकरी चलाकर पंडित जी भी नहाने की प्रक्रिया में लग गए कि न जाने किस तरह उनका लोटा कुँए में गिर गया। अब पंडित जी परेशान। आस पास से गुजर रहे लोगों को इशारे करके लगे संस्कृत में चिल्लाने दृ भो भो पथिकः! मम्घटः काष्ठकूपे पतितः कोऽपि धर्मी काष्ठकूपात् घटं बहिः निष्कासयतु ।

(मेरा लोटा काठ के कुँए में गिर गया है कोई धार्मिक महानुभाव लोटा काठ के कुँए से निकालने की कृपा करें)

परन्तु गाँव में इतना पढ़ा लिखा कोई न था जो उनकी संस्कृत समझ पाता। इस बात को बंठा हजाम समझ गया। उसने पंडित जी से हिंदी में बोलने को कहा लेकिन पंडित जी अडिग थे कि भले ही लोटा न मिले लेकिन बोली संस्कृत ही जाए। अब बंठा ने कहा 'पंडित जी! अब आप बैठ जाइए मै कुछ उपाय करता हूँ'। फिर उसने चिल्लाना शुरू किया–

"कष्टिका के कुष्टिका में लोष्टिका गीर्गिष्टताम, है कोई धर्मिष्टताम जो कष्टिका के कुष्टिका से लोष्टिका निकलाविष्टाम।"

अब लोगों के समझ में बात आई तो एक आदमी जो तैरना जानता था कमर में रस्सी बंधकर कुँए में उतरा और लोटा निकाल कर लोगों के खींचने पर आसानी से ऊपर भी आ गया। पंडित जी प्रसन्न हुए।

घर पहुँचने पर पंडित रामफल को सारी बातें पता चली। वे बहुत खुश हुए। बंठा की सभी ने खूब तारीफ की। अब पंडित रामफल ने बंठा को पंडित इन्द्रकांत का सलाहकार और संरक्षक बना दिया। इस फैसले से पंडित इन्द्रकांत के साथ घर, परिवार और गाँव के सभी लोग खुश थे।

◆

हृदय की कोई भाषा नहीं है
हृदय–हृदय से बातचीत करता है
और हिन्दी हृदय की भाषा है।

–महात्मा गाँधी

हिंदी पखवाड़ा–2025

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कार्यालयीन गतिविधियाँ

2025/08/01 15:23
Patna, India
Enter text

2025/08/01 15:20
Patna, India

2025/08/01 15:22
Patna, India
Enter text
Infinix NOTE30